भजन संग्रह

रमेश चन्द्र गुप्त 'विनीत'

भजन संग्रह

रमेश चन्द्र गुप्त 'विनीत'

भजन संग्रह

प्रथम संस्करण
चैत्र शुक्ल नवमी (श्री राम नवमी)
विक्रम सम्वत् 2082
तद्नुसार 6 अप्रैल 2025
को प्रकाशित

मूल्यः सदुपयोग

प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान
रमेश चन्द्र गुप्त 'विनीत'
1018, महागुन मैंशन-1, इन्दिरापुरम्, गाज़ियाबाद-201014
दूरभाषः 9818385001

डिजाइन व कम्पोजिंग
ग्रेटो इंटरप्राइजेज
जी-30, सरिता विहार, नई दिल्ली-110076
दूरभाषः 9910794578

प्राक्कथन

भजन का महत्त्व

निसिदिन रहु रत भजन में तजि कुसंग अभिमान।
ह्वै जैहै जीवन सफल मिलि जैहैं भगवान॥
– श्री सूर्य प्रसाद शुक्ल 'रामसरन'

बारि मथें घृत होइ बरु सिकता ते बरु तेल।
बिनु हरि भजन न भव तरिअ यह सिद्धांत अपेल॥

कलिजुग जोग न जग्य न ग्याना।
एक अधार राम गुन गाना॥
राम भजन बिनु मिटहिं कि कामा।
थल बिहीन तरु कबहुँ कि जामा॥
निज अनुभव अब कहउँ खगेसा।
बिनु हरि भजन न जाहिं कलेसा॥

ऐसे ही अनेकों दोहों, चौपाइयों में सन्त तुलसीदास ने भजन की महिमा गाई है। पूज्य स्वामी रामानन्द जी महाराज ने भी भजन और कीर्तन का महत्त्व समझाया है। वह स्वयं भी शिविरों में भजन कीर्तन किया करते थे।

भजन भक्ति का एक साधन है। सूर, तुलसी, मीरा, कबीर, नानक, रहीम, रसखान, दादू आदि भक्तगण इसका जीवन्त उदाहरण हैं। इनकी सभी रचनायें पद्य में ही उपलब्ध हैं। भजन गा गा कर इन सब भक्तों ने न केवल परम पद को प्राप्त किया, वरन् अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज का भी बहुत बड़ा उपकार किया है। देवर्षि नारद तो हर समय वीणा हाथ में रखते हैं और नारायण नारायण गाते रहते हैं।

भजन संगीतमय होता है; इसको लय और सुर के साथ गाया जाता है। दोहे और चौपाइयाँ भी सुर में गाये जाते हैं। यही कारण है कि भजन हों या चौपाइयाँ अथवा दोहे – इनको गाने वाले और सुनने वाले, दोनों ही आनन्द में झूम उठते हैं। बार-बार आवृत्ति होने के कारण ये शीघ्र ही कण्ठस्थ भी हो जाते हैं। वास्तव में भजन का महत्त्व तो कण्ठस्थ करके और अर्थों को समझ कर गाने से ही है क्योंकि लिखे हुए भजन को देखकर बोलने से भाव नहीं आ पाता। भजन गाने के लिये नहीं, अपने इष्ट को रिझाने के लिये गाया जाता है। भजन गाते समय भगवान् को अपने समक्ष उपस्थित समझना चाहिये।

भजनों का तो एक विशाल समुद्र है। अनगिनत भजनों का सृजन भक्तों द्वारा किया गया है। यद्यपि आधुनिक युग में गूगल और यू ट्यूब में भजनों की भरमार है; तथापि पुस्तक की अपनी अलग उपयोगिता है। इसी भावना से प्रेरित होकर लेखक ने यह तुच्छ प्रयास किया है। इन भजनों का चयन संकलनकर्ता ने विभिन्न स्रोतों से अपनी रुचि के अनुरूप किया है। पाठक-गण अपनी-अपनी पसन्द के अनुसार इनमें से भजनों का चुनाव कर सकते हैं और अकेले में अथवा मण्डली में गा सकते हैं।

इस पुस्तक के संकलन का पूरा श्रेय पूज्य गुरुदेव स्वामी रामानन्द जी महाराज को जाता है जिनकी प्रेरणा व मार्गदर्शन से ही मुझ जैसे अकिंचन द्वारा यह कार्य सम्पन्न हो पाया है। साथ ही लेखक आभारी है श्री सतीश अग्रवाल जी का जिन्होंने समय-समय पर मूल्यवान सुझाव देकर व पुस्तक के रूप में डिजाइनिंग करके अनुग्रहीत किया है।

आशा है भजनानन्दी पाठक-गण इससे लाभान्वित होंगे। संकलन के प्रयास में त्रुटियाँ तो अवश्य हुई होंगी जिसके लिये प्रस्तुतकर्ता क्षमा प्रार्थी है।

संकलनकर्ता - **रमेश चन्द्र गुप्त 'विनीत'**

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन - भजन का महत्व 3-4

1. अजब हैरान हूँ भगवन् 11-12
2. अनमोल तेरा जीवन यूँ ही गँवा रहा है 13
3. अपने चरणों का सतगुरु जी दो आसरा 14
4. अब सौंप दिया इस जीवन का 15
5. आओ मिल के विचार करें 16
6. आज मंगलवार है 17-19
7. आदत बुरी सुधार लो 20
8. आना पवनकुमार हमारे कीर्तन में 21
9. इतना तो करना स्वामी जब प्राण तन से निकले 22
10. इतनी शक्ति हमें देना दाता 23
11. उठ जाग मुसाफिर भोर भई 24
12. एक तुम्हीं आधार सद्गुरु 25
13. कट जायेंगे बंधन 127
14. कभी प्यासे को पानी 26
15. कर ले नारायण से प्यार 112
16. किस से बाँधू बैर 27
17. कृपा ऐसी करो भगवन् 28
18. कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो 29

19. खोलो दया का द्वार 19
20. ग़म ना करो 30
21. गीता का ज्ञान 31
22. गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः 32
23. गुरुदेव मेरे दाता मुझको ऐसा वर दो 33
24. गोविन्द जय-जय, गोपाल जय-जय 34
25. जगदम्बे जग जननी जय माँ.....34
26. जग में सुन्दर हैं दो नाम 35
27. जगत में कोई नहीं तेरा रे 36
28. जपे जा तू मन से सुबह और शाम 37-38
29. जब तक है ये ज़िन्दगी 39
30. ज़रा तो इतना बता दो भगवन् 40
31. ज़िन्दगी एक किराये का घर है 41
32. जैसी करनी वैसी भरनी 42
33. डरते रहो यह ज़िन्दगी बेकार ना हो जाय 45
34. तारा है सारा ज़माना 43
35. तुझे नारायण मिल जाएँगे 44-45
36. तुम ढूँढो मुझे गोपाल 46
37. तू तो डूबा हुआ भी तर जाएगा 47
38. तू है स्वामी मेरा मैं हूँ सेवक तेरा निर्विकारा 48
39. तेरा रामजी करेंगे बेड़ा पार 49
40. तेरी बन जैहैं गोविंद गुण गाये से 50

41. तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना 51
42. तेरे पूजन को भगवान् 52
43. तेरे फूलों से भी प्यार 53
44. तेरे नाम का सुमिरन करके 54
45. तेरे दर को छोड़कर 55
46. तोरा मन दर्पण कहलाये 56
47. दर्शन दो श्री राम 57
48. दाता एक राम भिखारी सारी दुनिया 58
49. दाता तेरे चरणों की 59
50. नगरी हो अयोध्या सी 60
51. नमस्कार भगवान् तुम्हें 61
52. नाम लिया जिनने हरि का 62
53. ना ये तेरा ना ये मेरा 63
54. पाइयाँ तेरे दर तों मैं रहमतां हज़ारां 64
55. पायोजी म्हे तो राम रतन धन पायो 65
56. पितु मात सहायक 66
57. प्रबल प्रेम के पाले पड़कर 67
58. प्रभु चरनन पे बलि जाऊँ 68
59. प्रभु मेरे जीवन का उद्धार कर दो 69
60. प्रभु हम भी शरणागत हैं 70
61. प्रभुजी अब तो कर दो पार 71
62. प्रभुजी तुम न मुझे दुतकारो 72

63. प्रभुजी मेरे औगुन चित ना धरो 73
64. प्रेम मुदित मन से कहो राम राम राम 74
65. बजरंग बली मेरी नाव चली 75
66. बंद कर खिड़की भले ही द्वार 76-77
67. भगत भक्ति से तारे हैं 77
68. भगवान् मेरी नैया उस पार लगा देना 78
69. भज मन राम चरण सुखदाई 79
70. भला किसी का कर ना सको 80
71. मन मैला और तन को धोये 81
72. मनका राम नाम का फेर 82
73. महामंत्र है ये 83-84
74. माँ तू प्रेम सुधा बरसा दे 84
75. माँ तेरे चरणों में हम शीश झुकाते हैं 85
76. मुझ पे इतनी कृपा बस विधाता रहे 86
77. मुझे अपनी शरण में ले लो राम 87
78. मुझे भगवान् वह दिल दे 88
79. मेरा आपकी कृपा से सब काम हो रहा है 89
80. मेरा कोई ना सहारा बिन तेरे 90
81. मेरा गोपाल गिरधारी ज़माने से निराला है 91
82. मेरे एक तुम्हीं आधार 92
83. मेरे गुरुदेव आशिष दो 93
84. मेरे दाता के दरबार में 38

85. मेरे देवता मुझ को देना सहारा 94
86. मेरे मन प्रीत लगा 95
87. मेहराँ वालिया 96
88. मैया बरस बरस रस वारी 97
89. मैली चादर ओढ़ के कैसे 97
90. मोहन प्रेम बिना नहिं मिलते 98
91. यदि नाथ का नाम दया निधि है 99
92. यहि विनती है पल पल छिन छिन 100
93. ये गर्व भरा मस्तक मेरा 101
94. ये तो प्रेम की बात है ऊधो 102
95. रचा है सृष्टि को जिस प्रभु ने 103
96. राम किरपा जो तेरी बरसती रहे 104
97. राम से बड़ा राम का नाम 107
98. राम है जीवन हमारा राम प्राणाधार है 105
99. रामा रामा रटते रटते 106
100. रे मन प्रति-श्वास पुकार यही 107
101. वह शक्ति हमें दो दयानिधे 108
102. विश्वपते जगदीश तू 109
103. शरण में आए हैं हम तुम्हारी 110
104. श्री वृन्दाबन धाम अपार 111-112
105. सत् गुरुदेव श्रद्धा सुमन अर्पण: 67
106. सदा अपनी रसना को रसमय बनाकर 113-114

107. संसार में जीवों पर 124
108. साधो सहज समाधि भली 114
109. सारे जहां के मालिक 115
110. साँसों का क्या भरोसा 116
111. सीताराम सीताराम सीताराम कहिये 117
112. सुख के सब साथी 118
113. सुख दुःख दोनों रहते 119
114. सुरत ध्यान प्रभु नाम से जोड़ो 120-121
115. हर स्वर मेरा झंकार करे 66
116. हर श्वास में हो सुमिरन तेरा 122
117. हरि नाम न हिरदय से भूलो 123
118. हे जग त्राता विश्व विधाता 124
119. हे नाथ अब तो ऐसी दया हो 125
120. हे मेरे गुरुदेव 126
121. हे राम जग में साँचो तेरा नाम 121
122. हे राम मैं तुझ में रम जाऊँ 127
123. हो जायें बन्द आँखें 128
124. आरति श्री रामायण जी की ..... तृतीय आवरण पृष्ठ

अजब हैरान हूँ भगवन्

अजब हैरान हूँ भगवन् तुम्हें क्योंकर रिझाऊँ मैं।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊँ मैं।।

भुजाएं हैं ना सीना है ना गर्दन है ना पेशानी।
कि तुम निर्लेप हो भगवन् कहाँ चन्दन लगाऊँ मैं।।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊँ मैं।।

लगाना भोग कुछ तुम को यह इक अपमान करना है।
खिलाता है जो सब जग को उसे क्योंकर खिलाऊँ मैं।।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊँ मैं।।

तेरी ज्योति से रोशन हैं ये सूरज चाँद और तारे।
महा अंधेर है तुम को अगर दीपक दिखाऊँ मैं।।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊँ मैं।।

बड़े वे लोग नादां हैं जो गढ़ते आपकी मूरत।
बनाता है जो सब जग को उसे क्योंकर बनाऊँ मैं।।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊँ मैं।।

करूँ किस ओर आवाहन कि तुम सर्वत्र व्यापक हो।
निरादर है बुलाने को अगर घण्टी बजाऊँ मैं।।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊँ मैं।।

तुम्हीं हो मूर्ति में भी तुम्हीं व्यापक हो फूलों में।
भला भगवान् को भगवान् पर क्योंकर चढ़ाऊँ मैं।।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊँ मैं।।

❖ ❖ ❖

उत्तर में भगवान् कहते हैं

सदा तुम मुझ से कहते हो तुम्हें क्योंकर रिझाऊँ मैं।
सुनो मेरे रिझाने का सरल रस्ता बताऊँ मैं।।

रिझाना जो मुझे चाहो विदुर से पूछ लो रस्ता।
सुदामा की झपट झोली खड़ा तंदुल चबाऊँ मैं।।
सुनो मेरे रिझाने का सरल रस्ता बताऊँ मैं।।

रिझाया था मुझे भिलनी ने देकर बेर जंगल के।
लगाया भोग उस दिन का कभी भी ना भुलाऊँ मैं।।
सुनो मेरे रिझाने का सरल रस्ता बताऊँ मैं।।

रिझाया था मुझे गजराज ने इक फूल देकर के।
गरुड़ को छोड़कर वैकुण्ठ नंगे पैर धाऊँ मैं।।
सुनो मेरे रिझाने का सरल रस्ता बताऊँ मैं।।

ना पत्थर का मुझे समझो नरम हूँ मोम से बढ़कर।
बहा दो प्रेम के आँसू पिघल बस छिन में जाऊँ मैं।।
सुनो मेरे रिझाने का सरल रस्ता बताऊँ मैं।।

ना रीझूं गान गप्पों से, न रीझूं तान टप्पों से।
लगे तुलसी लगन सच्ची तुरत तुझ में समाऊँ मैं।।
सुनो मेरे रिझाने का सरल रस्ता बताऊँ मैं।।

❖ ❖ ❖

अनमोल तेरा जीवन यूँ ही गँवा रहा है

अनमोल तेरा जीवन यूँ ही गँवा रहा है।
किस ओर तेरी मंज़िल किस ओर जा रहा है।।

सपने की नींद में ही कहीं रात ढल ना जाए।
पल भर का क्या भरोसा क्या जाने कल न आए।।
गिनती की हैं ये साँसे बिरथा गँवा रहा है।
अनमोल तेरा जीवन यूँ ही गँवा रहा है।।

जाएगा जब जहां से कोई न साथ देगा।
इस हाथ जो दिया है उस हाथ जा तू लेगा।।
कर्मों की है ये खेती फल जिसका पा रहा है।
अनमोल तेरा जीवन यूँ ही गँवा रहा है।।

ममता के बंधनों ने क्यों आज तुझको घेरा।
सुख के सभी हैं साथी दु:ख में न कोई तेरा।।
तेरा ही मोह तुझको कब से रुला रहा है।
अनमोल तेरा जीवन यूँ ही गँवा रहा है।।

जब तक है भेद दिल में भगवान् से जुदा है।
देखे जो मन का दर्पण घर में ही खुद खुदा है।।
आनन्द रूप होकर दु:ख क्यों तू पा रहा है।
अनमोल तेरा जीवन यूँ ही गँवा रहा है।।

❖ ❖ ❖

अपने चरणों का सतगुरु जी दो आसरा

अपने चरणों का सतगुरु जी दो आसरा,
फिर तो मेरा मुकद्दर बदल जाएगा।
सब दुखों से छुटूँगा ऐ मालिक मेरे,
लड़खड़ाता कदम ये संभल जाएगा।।

1. कर्म मेरे न देखो प्रभो नीच हूँ,
नीच से भी अधम नीच पापी हूँ मैं।
मेरे कर्मों पे गर ध्यान दोगे प्रभु,
आपका भी इरादा बदल जाएगा।।
अपने चरणों का सतगुरु जी दो आसरा,
फिर तो मेरा मुकद्दर बदल जाएगा।।

2. दीन बंधु दयालु तेरा नाम है,
प्यार दुखियों से करना तेरा काम है।
मेरी बिगड़ी बना दो लगे देर क्या,
आपका ही प्रभु नाम चल जाएगा।।
अपने चरणों का सतगुरु जी दो आसरा,
फिर तो मेरा मुकद्दर बदल जाएगा।।

3. आप की ही शरण में हूँ आया प्रभु,
लाज मेरी दयालु तेरे हाथ है।
तेरी नज़रे करम की ही तो बात है,
मैला दामन हमारा ये धुल जाएगा।।
अपने चरणों का सतगुरु जी दो आसरा,
फिर तो मेरा मुकद्दर बदल जाएगा।।

❖ ❖ ❖

अब सौंप दिया इस जीवन का

अब सौंप दिया इस जीवन का
सब भार तुम्हारे हाथों में
है जीत तुम्हारे हाथों में
और हार तुम्हारे हाथों में। अब सौंप दिया ...

मेरा निश्चय बस एक यही
इक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं
अर्पण कर दूँ दुनिया भर का
सब प्यार तुम्हारे हाथों में। अब सौंप दिया ...

यदि जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ
ज्यों जल में कमल का फूल रहे
मेरे सब गुण दोष समर्पित हों
सरकार तुम्हारे हाथों में। अब सौंप दिया ...

यदि मानुष का मुझे जन्म मिले
तो तव चरणों का पुजारी बनूँ
इस पूजक की इक इक रग का
हो तार तुम्हारे हाथों में। अब सौंप दिया ...

जब जब संसार का कैदी बनूँ
निष्काम भाव से कर्म करूँ
फिर अंत समय में प्राण तजूँ
भगवान् तुम्हारे हाथों में। अब सौंप दिया ...

मुझ में तुझ में बस भेद यही
मैं नर हूँ तुम नारायण हो
मैं हूँ संसार के हाथों में
संसार तुम्हारे हाथों में। अब सौंप दिया ...

❖ ❖ ❖

आओ मिल के विचार करें

1. आओ मिल के विचार करें।
   पहले हम आप सुधरें, फिर औरों का सुधार करें।।
2. ऐसा जीवन हमारा हो।
   चाँद सितारों से, बढ़कर उजियारा हो।।
3. बचें पाप की कमाई से,
   सदा शुभ कर्म करें, रहें दूर बुराई से।
4. सब यहीं रह जाएगा,
   दिया होगा जो हाथ से, वही साथ में जाएगा।
5. भगवान् को याद करें,
   जीवन कीमती है, इसे ना बर्बाद करें।
6. सब हैं मेहमान यहाँ,
   कर के भलाई जो गए, हैं उनके निशान यहाँ।
7. दिल किसी का दुखाना ना,
   सब में प्रभु बसता, उसे ठेस लगाना ना।
8. यह बात बतानी है,
   ओ पाप ना कर बन्दे, प्रभु अन्तर्यामी है।
9. जो तू पाप कमाएगा,
   याद रखना इक दिन, फल करनी का पाएगा।
10. हीरा जनम जो पाया है,
    फिर नहीं मिलना है, गर इसको गँवाया है।
    आओ मिल के विचार करें,
    पहले हम आप सुधरें, फिर औरों का सुधार करें।।

❖ ❖ ❖

आज मंगलवार है

आज मंगलवार है, महावीर का वार है,
सच्चे मन से जो कोई ध्यावे उसका बेड़ा पार है।

1. चैत सुदी पूनम मंगल को जन्म वीर ने पाया है,
जन्म वीर ने पाया है।
लाल लंगोटा गदा हाथ में सिर पर मुकुट सजाया है,
सिर पर मुकुट सजाया है।।
रूप का वार ना पार है, महावीर का वार है,
सच्चे मन से जो कोई ध्यावे उसका बेड़ा पार है।
आज मंगलवार है .....

2. ब्रह्माजी से ब्रह्म ज्ञान का बल भी तुमने पाया है,
बल भी तुमने पाया है।
राम काज शिवशंकर ने वानर का रूप बनाया है,
वानर का रूप बनाया है।।
शंकर का अवतार है, महावीर का वार है,
सच्चे मन से जो कोई ध्यावे उसका बेड़ा पार है।
आज मंगलवार है .....

3. बालापन में जो तुमने ऋषियों को नाच नचाया है,
ऋषियों को नाच नचाया है।
शाप दिया ऋषियों ने तुमको बल का ज्ञान भुलाया है,
बल का ज्ञान भुलाया है।
राम नाम आधार है, महावीर का वार है,
सच्चे मन से जो कोई ध्यावे उसका बेड़ा पार है।
आज मंगलवार है .....

4. पंचवटी में सीताजी को रावण लेकर आया है,
रावण लेकर आया है।
लंका में जाकर के तुमने माँ का पता लगाया है,
माँ का पता लगाया है।
अक्षय को दिया मार है, महावीर का वार है,
सच्चे मन से जो कोई ध्यावे उसका बेड़ा पार है।
आज मंगलवार है .....

5. मेघनाद ने ब्रह्मपाश में, तुमको आन फँसाया है,
तुमको आन फँसाया है।
ब्रह्मपाश में फँसकर के ब्रह्मा का मान बढ़ाया है,
ब्रह्मा का मान बढ़ाया है।
लीला अपरम्पार है, महावीर का वार है,
सच्चे मन से जो कोई ध्यावे उसका बेड़ा पार है।
आज मंगलवार है .....

6. लंक जलाई हनूवीर ने, रावण भी घबराया है,
रावण भी घबराया है।
रामचन्द्र को लाकर के सिया का सन्देश सुनाया है,
सिया का सन्देश सुनाया है।
सीता का सोच अपार है, महावीर का वार है,
सच्चे मन से जो कोई ध्यावे उसका बेड़ा पार है।
आज मंगलवार है .....

7. शक्ति लागी लक्ष्मण जी को बूटी लेने धाये हैं,
बूटी लेने धाये हैं।
संजीवनि लाकर के तुमने, लखन के प्राण बचाये हैं,
लखन के प्राण बचाये हैं।।
राम लखन से प्यार है, महावीर का वार है,
सच्चे मन से जो कोई ध्यावे उसका बेड़ा पार है।
आज मंगलवार है .....

8. राम चरण में हनूमान ने हरदम ध्यान लगाया है,
हरदम ध्यान लगाया है।
राम तिलक में महावीर ने सीना फाड़ दिखाया है,
सीना फाड़ दिखाया है।
सीने में दरबार है, महावीर का वार है,
सच्चे मन से जो कोई ध्यावे उसका बेड़ा पार है।
आज मंगलवार है .....

❖ ❖ ❖

खोलो दया का द्वार

खोलो दया का द्वार प्रभु जी अब खोलो दया का द्वार।
कई जन्मों से भटक रहा हूँ मत करना इनकार
प्रभु जी अब खोलो दया का द्वार।।

1. तेरा मेरा साथ पुराना तू दाता मैं भिखारी।
प्यार की भिक्षा डाल दो अब तो खड़ा मैं झोली पसार
प्रभु जी अब खोलो दया का द्वार।।

2. मत ठुकराना दीन को भगवन्, पतित हूँ फिर भी हूँ तेरा।
या कह दो पतितों का तुमने किया न कभी उद्धार
प्रभु जी अब खोलो दया का द्वार।।

3. तुम भी अगर प्रभु ठुकरा दोगे, मिलेगा कहाँ ठिकाना।
सब द्वारों को छोड़ के दाता, पकड़ा तेरा द्वार
प्रभु जी अब खोलो दया का द्वार।।

कई जन्मों से भटक रहा हूँ मत करना इनकार
प्रभु जी अब खोलो दया का द्वार।।

❖ ❖ ❖

आदत बुरी सुधार लो

आदत बुरी सुधार लो बस हो गया भजन।
मन की तरङ्ग मार लो बस हो गया भजन।।

1. आये कहाँ से और अब जाना कहाँ तुम्हें, सोचो
आये कहाँ से और अब जाना कहाँ तुम्हें,
इतना ज़रा विचार लो बस हो गया भजन।।
आदत बुरी सुधार लो बस हो गया भजन।

2. दृष्टि में तेरी दोष है दुनिया निहारते।
समता का अंजन डाल लो बस हो गया भजन।।
आदत बुरी सुधार लो बस हो गया भजन।

3. नेकी सभी के साथ में जितनी बने करो।
मत सिर बदी का भार लो बस हो गया भजन।।
आदत बुरी सुधार लो बस हो गया भजन।

4. कटुता मनों से त्याग दो मीठे वचन कहो।
वाणी का स्वर सुधार लो बस हो गया भजन।।
आदत बुरी सुधार लो बस हो गया भजन।

5. अच्छे हों या बुरे तुम्हें कर्मों के फल दिये, प्रभु ने
हँस कर सभी गुज़ार दो बस हो गया भजन।।
आदत बुरी सुधार लो बस हो गया भजन।

❖ ❖ ❖

आना पवनकुमार हमारे कीर्तन में

आना पवनकुमार हमारे कीर्तन में।
आना अंजनि के लाल हमारे कीर्तन में।

1. आप भी आना संग रामजी को लाना।
लाना जनक दुलारि हमारे कीर्तन में।
आना पवनकुमार हमारे कीर्तन में।

2. भरत जी को लाना लक्ष्मण जी को लाना।
लाना सब परिवार, हमारे कीर्तन में।
आना पवनकुमार हमारे कीर्तन में।

3. आप भी आना संग राधा जी को लाना।
लाना नन्द के लाल, हमारे कीर्तन में।
आना पवनकुमार हमारे कीर्तन में।

4. शंकर जी को लाना, नारद जी को लाना।
डमरू वीणा बजाना, हमारे कीर्तन में।
आना पवनकुमार हमारे कीर्तन में।

5. सुमति को लाना, कुमति को हटाना।
करना बेड़ा पार, हमारे कीर्तन में।
आना पवनकुमार हमारे कीर्तन में।

❖ ❖ ❖

इतना तो करना स्वामी जब प्राण तन से निकले

इतना तो करना स्वामी जब प्राण तन से निकले।
गोविन्द नाम लेकर फिर प्राण तन से निकले।।

1. श्री गंगा जी का तट हो यमुना का वंशी बट हो।
मेरा साँवरा निकट हो जब प्राण तन से निकले।।

2. श्री वृन्दाबन का थल हो मेरे मुख में तुलसी दल हो।
विष्णु चरण का जल हो जब प्राण तन से निकले।।

3. वह साँवरा खड़ा हो वंशी का स्वर भरा हो।
तिरछा चरण धरा हो जब प्राण तन से निकले।।

4. सिर सोहना मुकुट हो मुखड़े पे काली लट हो।
यही ध्यान मेरे घट हो जब प्राण तन से निकले।।

5. उस वक्त जल्दी आना नहीं श्याम भूल जाना।
वंशी की धुन सुनाना जब प्राण तन से निकले।।

6. आना ज़रूर आना राधा को साथ लाना।
दर्शन मुझे दिखाना जब प्राण तन से निकले।।

7. सिर चरण रज लगाऊँ पग धो तृषा मिटाऊँ।
तुलसी का पत्र पाऊँ जब प्राण तन से निकले।।

8. जब प्राण कंठ आवे कोई रोग ना सतावे।
यम दर्श ना दिखावे जब प्राण तन से निकले।।

9. मेरा प्राण निकले सुख से तेरा नाम निकले मुख से।
बच जाऊँ घोर दुःख से जब प्राण तन से निकले।।

इतना तो करना स्वामी जब प्राण तन से निकले।।

❖ ❖ ❖

इतनी शक्ति हमें देना दाता

इतनी शक्ति हमें देना दाता मन का विश्वास कमज़ोर हो ना।
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे भूल कर भी कोई भूल हो ना।।

दूर अज्ञान के हों अँधेरे, तू हमें ज्ञान की रोशनी दे।
हर बुराई से बचते रहें हम, जितनी भी दे भली ज़िन्दगी दे।।
बैर हो ना किसी का किसी से, भावना मन में बदले की हो ना।
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे भूल कर भी कोई भूल हो ना।।

हम ना सोचें हमें क्या मिला है, हम ये सोचें किया क्या है अर्पण।
फूल खुशियों के बाँटें सभी को, सबका जीवन ही बन जाय मधुबन।।
अपनी करुणा का जल तू बहा के, कर दे पावन हर एक मन का कोना।
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे भूल कर भी कोई भूल हो ना।।

हर तरफ ज़ुल्म है बेबसी है, सहमा सहमा सा हर आदमी है।
पाप का बोझ बढ़ता ही जाए, जाने कैसे ये धरती थमी है।।
बोझ धरती का ये तू उठा ले, तेरी रचना का ये अंत हो ना।
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे भूल कर भी कोई भूल हो ना।।

हम अँधेरे में हैं रोशनी दे, खो न दें खुद को ही दुश्मनी से।
हम सज़ा पाएँ अपने किये की, मौत भी हो तो सह लें खुशी से।।
कल जो गुज़रा है फिर से न गुज़रे, आने वाला वो कल ऐसा हो ना।
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे भूल कर भी कोई भूल हो ना।।

इतनी शक्ति हमें देना दाता मन का विश्वास कमज़ोर हो ना। (2)

❖ ❖ ❖

उठ जाग मुसाफिर भोर भई

उठ जाग मुसाफिर भोर भई
अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो जागत है सो पावत है
जो सोवत है सो खोवत है।। उठ जाग....

उठ नींद से अँखियाँ खोल ज़रा
और अपने प्रभु में ध्यान लगा।
यह प्रीत करन की रीत नहीं
प्रभु जागत है तू सोवत है।। उठ जाग.....

जो कल करना सो आज कर ले
जो आज करे सो अब कर ले।
जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया
फिर पछताए क्या होवत है।। उठ जाग....

नादान भुगत अपनी करनी
ऐ पापी पाप में चैन कहाँ।
जब पाप की गठरी शीश धरी
अब शीश पकड़ क्यूँ रोवत है।। उठ जाग....

❖ ❖ ❖

एक तुम्हीं आधार सद्गुरु

एक तुम्हीं आधार सद्गुरु एक तुम्हीं आधार। (2)

जब तक मिलो न तुम जीवन में।
शांति कहाँ मिल सकती मन में।
खोज फिरा संसार सद्गुरु, एक तुम्हीं आधार।
एक तुम्हीं आधार सद्गुरु एक तुम्हीं आधार।

कैसा भी हो तैरन हारा,
मिले न जब तक शरण सहारा।
हो न सका उस पार, सद्गुरु एक तुम्हीं आधार।
एक तुम्हीं आधार .....

हे प्रभु तुम ही विविध रूपों में।
हमें बचाते भव कूपों से।
ऐसे परम उदार सद्गुरु एक तुम्हीं आधार।
एक तुम्हीं आधार .....

छा जाता जग में अंधियारा।
तब पाने प्रकाश की धारा।
आते तेरे द्वार सद्गुरु एक तुम्हीं आधार।
एक तुम्हीं आधार ....

हम आये हैं द्वार तुम्हारे।
अब उद्धार करो दु:ख हारे।
सुन लो करुण पुकार सद्गुरु एक तुम्हीं आधार।
एक तुम्हीं आधार .....

❖ ❖ ❖

कभी प्यासे को पानी

कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं, बाद अमृत पिलाने से क्या फ़ायदा।
कभी गिरते हुए को उठाया नहीं, बाद आंसू बहाने से क्या फ़ायदा।।

मैं तो मन्दिर गया पूजा आरती की, पूजा करते हुए ये ख़याल आ गया।
कभी माँ बाप की सेवा की ही नहीं, सिर्फ़ पूजा करने से क्या फायदा।।

मैं तो सतसंग गया गुरु वाणी सुनी, गुरु वाणी को सुन कर ख़याल आ गया।
जन्म मानव का लेकर दया ना करी, फिर मानव कहलाने से क्या फ़ायदा।।

मैंने दान किया मैंने जप तप किया, दान करते हुए ये ख़याल आ गया।
कभी भूखे को भोजन खिलाया नहीं, दान लाखों का करने से क्या फ़ायदा।।

गंगा नहाने हरिद्वार काशी गया, गंगा नहाते ही मन में ख़याल आ गया।
तन को धोया मग़र मन को धोया नहीं, फिर गंगा नहाने से क्या फ़ायदा।।

मैंने वेद पढ़े मैंने शास्त्र पढ़े, शास्त्र पढ़ते हुए ये ख़याल आ गया।
मैंने ज्ञान किसी को बाँटा ही नहीं, फिर ज्ञानी कहलाने से क्या फ़ायदा।।

माँ पिता के ही चरणों में चारों धाम हैं, आजा आजा यही मुक्ति का धाम है।
पिता माता की सेवा करी ही नहीं, फिर तीर्थों में जाने से क्या फ़ायदा।।

कभी प्यासे को पानी .....

किस से बाँधू बैर

किस से बाँधू बैर जगत में कोई नहीं है पराया।
हर मानव में प्रतिबिंबित है उसी ब्रह्म की छाया।।

1. जैसे माला के मनकों में केवल अंक पिरोया।
उसी भाँति प्रति व्यक्ति में वही ईश है सोया।।
दीन दरिद्रों में मुस्काया धनियों में वह रोया।
उसने पाया जिसने अपने दम्भ दर्प को खोया।
जगदीश्वर को प्यार करम से उसे ना भाई काया रे
रे भाई उसे न भाई काया। किस से बाँधू बैर .....

2. प्रेम मलय शीतलता देता बैर बढ़ाता ताप रे।
प्रेम सदा आशीष बाँटता बैर सदा अभिशाप रे।
प्रेम नदी की मंद धार है बैर मरुस्थल आँधी।
प्रेम मंद मुस्कान प्रदाता बैर आधि और व्याधी।।
बैर चूसता रक्त प्रेम करता है उसे सवाया
रे भाई करता उसे सवाया।। किस से बाँधू बैर .....

3. किसकी हुई आज तक बोलो दाम चाम धन बरती।
आँखें मिचते ही हे भाई पड़ी रहेगी धरती।।
यही वस्तुएँ तो जीवों का नित बंधन हैं करती।
फिर भी स्वाद बड़ा अलबेला जगती इन पर मरती।।
सब जग तो फँस ही जाता है दुर्गम कैसी माया रे
रे भाई दुर्गम कैसी माया।। किस से बाँधू बैर .....

किस से बाँधू बैर जगत में कोई नहीं है पराया।
हर मानव में प्रतिबिंबित है उसी ब्रह्म की छाया।।

❖ ❖ ❖

कृपा ऐसी करो भगवन्

कृपा ऐसी करो भगवन् मुझे अब ज्ञान आ जाए।
तुम्हारे नाम का सुमिरन भी करना आप आ जाए।।

1. मैं निर्धन हूँ मैं दुर्बल हूँ, दुखी भी हूँ भिखारी भी।
मगर फिर भी तुम्हारा हूँ प्रभु नित ध्यान आ जाए।।
तुम्हारे नाम का ....

2. अकर्मी हूँ अधर्मी हूँ, मैं पापी हूँ भ्रमित भी हूँ।
मगर सेवक तुम्हारा हूँ, यही बस ध्यान आ जाए।।
तुम्हारे नाम का .....

3. भँवर में फँस रही नैया, नहीं कोई खेवैया है।
उबारो फिर न हो ऐसा, कहीं तूफ़ान आ जाए।।
तुम्हारे नाम का .....

कृपा ऐसी करो भगवन् मुझे अब ज्ञान आ जाए।
तुम्हारे नाम का सुमिरन भी करना आप आ जाए।।

❖ ❖ ❖

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो।
मन को विषयों के विष से हटाते चलो।।

देखना इन्द्रियों के न घोड़े भगें।
रात दिन इनपे संयम के कोड़े लगें।।
अपने रथ को सुमारग चलाते चलो।
कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो।।

काम करते रहो नाम जपते रहो।
पापों की वासनाओं से बचते रहो।।
नाम धन का खज़ाना बढ़ाते चलो।
कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो।।

दु:ख में तड़पो नहीं सुख में फूलो नहीं।
प्राण जाएँ मग़र नाम भूलो नहीं।।
प्रेम भक्ति के आँसू बहाते चलो।
कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो।।

ध्यान आएगा उन को कभी न कभी।
श्याम दर्शन तो देंगे कभी न कभी।।
ऐसा विश्वास मन में जमाते चलो।
कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो।।

❖ ❖ ❖

ग़म ना करो

ग़म ना करो गर दुनिया में काँटों का हार मिला।
शुक्र करो हर पल तुमको प्रभु का आधार मिला।।

ग्रह नक्षत्र सितारे बादल बनकर छाते हैं।
करनी के बीजों पर अपना जल बरसाते हैं।।
सुख दु:ख अपने कर्मों का तुमको उपहार मिला।
शुक्र करो हर पल तुमको प्रभु का आधार मिला।।
ग़म ना करो .....

बिखर गया गर सपना तो तू उसका ग़म ना कर।
सपनों की इस दुनिया में अपनों का दम ना भर।
एक प्रभु सच है सबको जीवन का सार मिला।
शुक्र करो हर पल तुमको प्रभु का आधार मिला।।
ग़म ना करो .....

आशाएँ मन में रखना तो कोई दोष नहीं।
बात न बन पाए तो प्यारे खोना होश नहीं।।
कौन यहाँ ऐसा है जिसको सब संसार मिला।
शुक्र करो हर पल तुमको प्रभु का आधार मिला।।
ग़म ना करो .....

❖ ❖ ❖

गीता का ज्ञान

गीता का ज्ञान सभी जग को बतला दिया कृष्ण मुरारी ने।
इक ज्ञान का सूरज दुनिया को दिखला दिया कृष्ण मुरारी ने।।

1. अर्जुन जब रण में घबराया, अपनों को देखा चकराया।
तब सीधा मारग अर्जुन को बतला दिया कृष्ण मुरारी ने।।

2. है नाशवान सब की काया, इक अमर आत्मा बतलाया।
कर सकता इसका नाश कौन, बतला दिया कृष्ण मुरारी ने।।

3. है कर्मों में अधिकार तेरा, फल में तेरा अधिकार नहीं।
निष्काम कर्म का साधन यह, बतला दिया कृष्ण मुरारी ने।।

4. परधर्म से श्रेष्ठ स्वधर्म सदा, चाहे उसमें हो नीरसता।
निज धर्म पे मर मिटना अच्छा, बतला दिया कृष्ण मुरारी ने।।

5. सब में ही ईश्वर को देखो, और ईश्वर में सबको देखो।
है यही ज्ञान का मार्ग सही, बतला दिया कृष्ण मुरारी ने।।

6. मन बुद्धि और चित्त सारे, ईश्वर को अर्पण कर प्यारे।
निश्चय ईश्वर को पायेगा, बतला दिया कृष्ण मुरारी ने।।

7. सब अवलम्बन तज कर प्यारे, तू शरण मेरी में आजा रे।
कर दूँ पापों से मुक्त तुझे, बतला दिया कृष्ण मुरारी ने।।

8. कलियुग में हैं पातक नाना, है सार एक हरिगुण गाना।
हरिदास बनो हरि नाम जपो, बतला दिया कृष्ण मुरारी ने।।

गीता का ज्ञान सभी जग को बतला दिया कृष्ण मुरारी ने।।

❖ ❖ ❖

गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः

गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः।
तुम्हरी महिमा है अपार महा।
गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः।

1. तुम ही हरि हो तुम ही हर हो।
तुम शेष गणेश दिवाकर हो।
तुम्हरी महिमा है अपार महा।
गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः।

2. तुम पूरण ज्ञान प्रकाशक हो।
घट अंतर भीतर बाहर हो।
तुम्हरी महिमा है अपार महा।
गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः।

3. तुम मात पिता और भ्राता हो।
तुम मुक्ति के भी दाता हो।
तुम्हरी महिमा है अपार महा।
गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः।

4. प्रभु नैया मेरी मझधार पड़ी।
तव कृपा बिन मेरा कौन हरि।
तुम्हरी महिमा है अपार महा।
गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः।

5. तुम जानत हो सबके मन की।
क्यों भूल गए हमरे मन की।
तुम्हरी महिमा है अपार महा।
गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः।

❖ ❖ ❖

गुरुदेव मेरे दाता मुझको ऐसा वर दो

गुरुदेव मेरे दाता मुझको ऐसा वर दो।
सेवा सुमिरन सत्संग झोली में मेरी भर दो।।

1. नफ़रत जो करे हमसे हम उससे प्यार करें।
जो चाहे हमारा बुरा उसका सत्कार करें।।
नफरत को मिटा करके तुम प्यार का रंग भर दो।
सेवा सुमिरन सत्संग झोली में मेरी भर दो।।

2. मेरे मन के मंदिर में सद्गुरु तुम बस जाओ।
जिस ओर भी मैं देखूँ बस तुम ही नज़र आओ।।
दे राम नाम अमृत जीवन को अमर कर दो।
सेवा सुमिरन सत्संग झोली में मेरी भर दो।।

3. इस दुःख भरी दुनिया में बस तेरा सहारा है।
सच कहता हूँ गुरुवर तू प्राणों से प्यारा है।।
इस नीरस जीवन में तुम प्यार का रस भर दो।
सेवा सुमिरन सत्संग झोली में मेरी भर दो।।

4. सेवा हो शबरी सी और प्रेम हो मीरा सा।
श्रद्धा हो तुलसी सी और बोल कबीरा सा।।
बस इतनी तमन्ना है सद्गुरु पूरी कर दो।
सेवा सुमिरन सत्संग झोली में मेरी भर दो।।

गुरुदेव मेरे दाता मुझको ऐसा वर दो।
सेवा सुमिरन सत्संग झोली में मेरी भर दो।।

❖ ❖ ❖

गोविन्द जय-जय, गोपाल जय-जय

गोविन्द जय-जय, गोपाल जय-जय।
राधा-मुकुन्द-हरि, गोविन्द जय-जय।
ब्रह्मा की जय-जय, विष्णु की जय-जय।
उमा-पति शिव शंकर की जय जय।
राधा की जय-जय, रुक्मिणी की जय-जय।
मोर-मुकुट बंसीवारे की जय-जय।
गंगा की जय-जय, यमुना की जय-जय।
सरस्वती, त्रिवेणी की जय-जय।
राम की जय-जय, सीता की जय-जय।
दशरथ-कुँवर चारों भाइयों की जय जय।
नारायण की जय जय, लक्ष्मी की जय जय।
कृष्ण बलदेव दोनों भाइयों की जय जय।

❖ ❖ ❖

जगदम्बे जग जननी जय माँ

जगदम्बे जग जननी जय माँ।
जय माँ, जय माँ, जय जय माँ।। जगदम्बे.....
निर्मल मन दो ज्ञान विमल दो।
सबल मति दो हमको माँ।। जगदम्बे.....
अटल भक्ति दो पूर्ण प्रेम दो।
अमर स्नेह दो हमको माँ।। जगदम्बे.....
शरण तिहारी आए माँ।
हमको अपना कर लो माँ।। जगदम्बे.....
शरण तिहारी आए माँ।
अपना सिमरन दे दो माँ।। जगदम्बे.....

❖ ❖ ❖

जग में सुन्दर हैं दो नाम

जग में सुन्दर हैं दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम।।

एक हृदय में प्रेम बढ़ावै, एक ताप सन्ताप मिटावै।
दोनों सुख के सागर हैं और दोनों पूरण काम।।
चाहे कृष्ण कहो या राम .....

माखन ब्रज में एक चुरावै, एक बेर भिलनी के खावै।
प्रेम भाव से भरे अनोखे, दोनों के हैं काम।।
चाहे कृष्ण कहो या राम .....

एक कंस पापी को मारे, एक दुष्ट रावण संहारे।
दोनों दीन के दुःख हरत हैं, दोनों बल के धाम।।
चाहे कृष्ण कहो या राम .....

एक राधिका के संग राजे, एक जानकी संग बिराजे।
चाहे सीताराम कहो, या बोलो राधेश्याम।।
चाहे कृष्ण कहो या राम .....

दोनों हैं घट घट के वासी, दोनों हैं आनन्द प्रकाशी।
राम श्याम के दिव्य भजन से मिलता है विश्राम।।
चाहे कृष्ण कहो या राम .....

❖ ❖ ❖

जगत में कोई नहीं तेरा रे

जगत में कोई नहीं तेरा रे, कोई नहीं तेरा रे।
छोड़ वृथा अभिमान त्याग दे मेरा मेरा रे।
जगत में कोई नहीं तेरा रे, कोई नहीं तेरा रे।

काल करम बस जग सराय में कीन्हा डेरा रे।
इस सराय के सभी मुसाफिर रैन बसेरा रे।
जगत में कोई नहीं तेरा रे, कोई नहीं तेरा रे।

जिस तन को तू सदा सँवारे साँझ सवेरा रे।
इक दिन मरघट पड़ा भस्म का होकर ढेरा रे।
जगत में कोई नहीं तेरा रे, कोई नहीं तेरा रे।

मात पिता भ्राता सुत बांधव नारी चेरा रे।
अन्त न होय सहाय काल जब देवे घेरा रे।
जगत में कोई नहीं तेरा रे, कोई नहीं तेरा रे।

जग का सारा भोग सदा कारण दुःख केरा रे।
भज मन हरि का नाम पार हो भव का बेड़ा रे।
जगत में कोई नहीं तेरा रे, कोई नहीं तेरा रे।

❖ ❖ ❖

जपे जा तू मन से सुबह और शाम

जपे जा तू मन से सुबह और शाम।
श्री राम जय राम जय जय राम।।

1. अहिल्या को जिनकी चरण रज ने तारा।
शिला से बनाया नारी दोबारा।।
हरेंगे वो तेरे भी संकट तमाम।
श्री राम जय राम जय जय राम।।

2. अगर भाव तेरा हो शबरी के जैसा।
तो रख आस्था होगा चमत्कार ऐसा।।
खुद चल के आयेंगे प्रभु तेरे धाम।
श्री राम जय राम जय जय राम।।

3. दो अक्षरों की अनोखी है माया।
जो निशदिन उचारे वही जान पाया।।
प्रभु ने किये हैं सफल सारे काम।
श्री राम जय राम जय जय राम।।

4. दिया राम भक्ति का मन में जगा ले।
प्रभु राम के रंग में अंग अंग रंगा ले।।
नज़र तुझको आयेंगे कण कण में राम।
श्री राम जय राम जय जय राम।।

5. जो सिर को झुका कर शरण इनकी आया।
तो हँस के उसे अपने गले से लगाया।।
जो है राम जी का उसी के हैं राम।
श्री राम जय राम जय जय राम।।

6. मूरत दया की हैं करुणा के सागर।
ऐसे कृपालु हैं मेरे ये रघुबर।।

उनकी दया के हैं चर्चे तमाम।
श्री राम जय राम जय जय राम।।

7. राम नाम की एक माला बना ले।
न रख हाथ में अपने हृदय में समा ले।।
आकर बसेंगे तेरे मन में राम।
श्री राम जय राम जय जय राम।।

❖ ❖ ❖

मेरे दाता के दरबार में

मेरे दाता के दरबार में है सब ही का खाता।
जितना जिसके भाग्य में होता उतना ही मिल पाता।।
इस खाते में जो भी अपनी पूँजी जमा कराता।
मानुष तन की यही कमाई जन्म-जन्म तक खाता।।
मानव देखो बने देवता ऊँचे पद को पाता।
मेरे दाता के दरबार में है सब ही का खाता।।
पूँजी सेवा और भजन की जमा कराते रहना।
ये ही तेरे काम आयेगा राम नाम का गहना।।
सच्चा रिश्ता एक यही है यही पिता यही माता।
मेरे दाता के दरबार में है सब ही का खाता।।
अपने प्रभु से जोड़ के देखो प्रेम प्यार का नाता।
इन चरणों में अमृत पाकर जो आता पी जाता।।
पाकर इनकी चरण धूलि को भवसागर तर जाता।
मेरे दाता के दरबार में है सब ही का खाता।।
राम रहम का दाता है तू झोली अपनी भरता जा।
फल की इच्छा छोड़ के बन्दे सेवा भक्ति करता जा।।
रोम रोम में राम है रमता सब का भाग्य विधाता।
मेरे दाता के दरबार में है सब ही का खाता।।

❖ ❖ ❖

जब तक है ये ज़िन्दगी

जब तक है ये ज़िन्दगी फुरसत ना मिलेगी काम से।
ऐसा कोई समय निकालो प्रीत बने श्री राम से।
श्री राम जय राम जय जय राम, जय राम जय राम जय जय राम।।
राम नाम के दो अक्षर की महिमा है अति भारी।
राम कृपा जिसके ऊपर हो सुखी रहे संसारी।
राम नाम नित बोल तू बंदे जीवन बिता आराम से।
ऐसा कोई समय निकालो प्रीत बने श्री राम से।
श्री राम जय राम जय जय राम, जय राम जय राम जय जय राम।।
पाँच पहर धन पाने खातिर यहाँ वहाँ तू खोये।
तीन पहर तू तान के चादर गहरी नींद में सोये।
एक पहर तो सुमिरन कर ले दाता का विश्राम से।
ऐसा कोई समय निकालो प्रीत बने श्री राम से।
श्री राम जय राम जय जय राम, जय राम जय राम जय जय राम।।
बचपन बीता खेल खेल में और जवानी राग रंग।
सारा जीवन बीत गया पर किया नहीं संतों का संग।
राम रंग में रंग जा अब तो सेवा कर निष्काम से।
ऐसा कोई समय निकालो प्रीत बने श्री राम से।
श्री राम जय राम जय जय राम, जय राम जय राम जय जय राम।।
एक घड़ी आधी घड़ी आधी में पुनि आध।
तुलसी संगत साध की हरे कोटि अपराध।
पत्थर भी सागर में तर गए इसी राम के नाम से।
ऐसा कोई समय निकालो प्रीत बने श्री राम से।
श्री राम जय राम जय जय राम, जय राम जय राम जय जय राम।।

❖ ❖ ❖

ज़रा तो इतना बता दो भगवन्

ज़रा तो इतना बता दो भगवन् लगन ये कैसी लगा रहे हो।
मुझी में रहकर मुझी से अपनी ये खोज कैसी करा रहे हो।।

1. हृदय भी तुम हो तुम्हीं हो प्रियतम,
प्रेम भी तुम हो तुम्हीं हो प्रेमी।
पुकारता मन तुम्हीं को क्यों है,
तुम्हीं तो मन में समा रहे हो। ज़रा तो इतना ...

2. सीप भी तुम हो तुम्हीं हो मोती,
दीप भी तुम हो तुम्हीं हो ज्योति।
तुम्हीं से लेकर तुम्हीं को दे दूँ,
नई ये लीला रचा रहे हो। ज़रा तो इतना ....

3. कर्म भी तुम हो तुम्हीं हो कर्ता,
धर्म भी तुम हो तुम्हीं हो धर्ता।
निमित्त कारण मुझे बनाकर,
ये नाच कैसा नचा रहे हो। ज़रा तो इतना .....

4. भाव भी तुम हो तुम्हीं हो रचना,
गीत भी तुम हो तुम्हीं हो रसना।
स्तुति तुम्हारी तुम्हीं से गाऊँ,
नई ये रीति बता रहे हो। ज़रा तो इतना ....

❖ ❖ ❖

ज़िन्दगी एक किराये का घर है

ज़िन्दगी एक किराये का घर है इक ना इक दिन बदलना पड़ेगा।
मौत जब तुझ को आवाज़ देगी घर से बाहर निकलना पड़ेगा।।

रूठ जाएँगी जब तुझ से खुशियाँ ग़म के साँचे में ढलना पड़ेगा।
वक्त ऐसा भी आएगा नादां तुझ को काँटों पे चलना पड़ेगा।।
मौत जब तुझ को आवाज़ देगी घर से बाहर निकलना पड़ेगा।।

कितना मशहूर हो जाएगा तू इतना मजबूर हो जाएगा तू।
ये जो मखमल का चोला है तेरा ये कफ़न में बदलना पड़ेगा।।

ऐसी हो जाएगी तेरी हालत काम आएगी दौलत ना ताकत।
छोड़ कर अपनी ऊँची हवेली तुझ को बाहर निकलना पड़ेगा।।

बाप बेटे ये भाई भतीजे तेरे साथी हैं जीते जी के।
अपने आँगन से उठना पड़ेगा अपनी चौखट से चलना पड़ेगा।।

ज़िन्दगी एक किराये का घर है इक ना इक दिन बदलना पड़ेगा।
मौत जब तुझ को आवाज़ देगी घर से बाहर निकलना पड़ेगा।।

❖ ❖ ❖

जैसी करनी वैसी भरनी

जैसी करनी वैसी भरनी जो बोया सो पाना है।
आज नहीं तो कल कर्मों का फल आगे आ जाना है।।

1. इसी नियम से बँधा हुआ है देखो ये सारा संसार।
यहाँ किसी की जीत न समझो नहीं किसी की समझो हार।।
जीता यम के द्वार गया हारे का हरि ठिकाना है।
आज नहीं तो कल कर्मों का फल आगे आ जाना है।।

2. दु:ख सुख बनकर जन्म जन्म के करम सामने आते हैं।
धूप छाँव की तरह हमारे जीवन में छा जाते हैं।।
स्वयं हमें अपने कर्मों से अपना भाग्य बनाना है।
आज नहीं तो कल कर्मों का फल आगे आ जाना है।।

3. यहाँ गुमान ना करना धरती धाम रतन धन जीवन का।
काया राख बनेगी यह धन काम करेगा ईंधन का।।
जो कुछ देख रहे हैं हम सब में परिवर्तन आना है।
आज नहीं तो कल कर्मों का फल आगे आ जाना है।।

4. जग में कुछ करने से पहले भले बुरे का करो विचार।
उसको ही अपनाओ जिसको अन्त:करण करे स्वीकार।।
संतों के संग रहो जिन्होंने परम तत्त्व पहचाना है।
आज नहीं तो कल कर्मों का फल आगे आ जाना है।।

जैसी करनी वैसी भरनी जो बोया सो पाना है।
आज नहीं तो कल कर्मों का फल आगे आ जाना है।।

❖ ❖ ❖

तारा है सारा ज़माना

तारा है सारा ज़माना श्याम हम को भी तारो।
हम को भी तारो श्याम हम को भी तारो।
तारा है सारा ज़माना श्याम हम को भी तारो।

1. हम ने सुना है श्याम मीरा को तारा। –2
वीणा का करके बहाना श्याम हम को भी तारो।
तारा है सारा ज़माना श्याम हम को भी तारो।

2. हमने सुना है श्याम द्रौपदी को तारा। –2
साड़ी का करके बहाना श्याम हमको भी तारो।
तारा है सारा ज़माना श्याम हम को भी तारो।

3. हमने सुना है श्याम कुब्जा को तारा। –2
चन्दन का करके बहाना श्याम हमको भी तारो।
तारा है सारा ज़माना श्याम हम को भी तारो।

4. हमने सुना है श्याम गणिका को तारा। –2
तोते का करके बहाना श्याम हमको भी तारो।
तारा है सारा ज़माना श्याम हम को भी तारो।

5. हमने सुना है श्याम अर्जुन को तारा। –2
गीता का करके बहाना श्याम हमको भी तारो।
तारा है सारा ज़माना श्याम हम को भी तारो।

6. हमने सुना है श्याम भिलनी को तारा। –2
बेरों का करके बहाना श्याम हमको भी तारो।
तारा है सारा ज़माना श्याम हम को भी तारो।

❖ ❖ ❖

तुझे नारायण मिल जाएँगे

तुझे नारायण मिल जाएँगे बस गाए जा तू हरि हरि।
तुझे भव से पार कराएँगे बस गाए जा तू हरि हरि।।
हरि ॐ हरि ॐ ....

1. नरसिंह रूप में दौड़े आए प्रहलाद ने गाया हरि हरि।
अग्नि से उन्हें बचाया था और मन में बसाया हरि हरि।।
हरि ॐ हरि ॐ ....
वो तेरे भी कष्ट मिटाएंगे बस गाए जा तू हरि हरि।
तुझे नारायण मिल जाएँगे बस गाए जा तू हरि हरि।।
हरि ॐ हरि ॐ ....
तुझे भव से पार कराएँगे बस गाए जा तू हरि हरि।।
हरि ॐ हरि ॐ ....

2. राम रूप में जनम लिया है जग ने पुकारा हरि हरि।
दीन हीन लाचारों का है बस एक सहारा हरि हरि।।
हरि ॐ हरि ॐ ....
तुझ को भी गले लगाएँगे बस गाए जा तू हरि हरि।
तुझे नारायण मिल जाएँगे बस गाए जा तू हरि हरि।।
हरि ॐ हरि ॐ ....
तुझे भव से पार कराएँगे बस गाए जा तू हरि हरि।।
हरि ॐ हरि ॐ ....

3. श्याम रूप में प्रकट हुए हैं टेर सुनी जब हरि हरि।
धन्य हुआ है जीवन सारा बोल रहे सब हरि हरि।।
हरि ॐ हरि ॐ ....
तेरे बिगड़े काम बनाएँगे बस गाए जा तू हरि हरि।
तुझे नारायण मिल जाएँगे बस गाए जा तू हरि हरि।।
हरि ॐ हरि ॐ ....

तुझे भव से पार कराएँगे बस गाए जा तू हरि हरि।।
हरि ॐ हरि ॐ ....

4. सारे जगत में गूंज रहा है नाम ये प्यारा हरि हरि।
जगत की प्यास मिटा देती है अमृत धारा हरि हरि।।
हरि ॐ हरि ॐ ....
तुझे अपना दरस कराएँगे बस गाए जा तू हरि हरि।
तुझे नारायण मिल जाएँगे बस गाए जा तू हरि हरि।।
हरि ॐ हरि ॐ ....
तुझे भव से पार कराएँगे बस गाए जा तू हरि हरि।।
हरि ॐ हरि ॐ ....

❖ ❖ ❖

डरते रहो यह ज़िन्दगी बेकार ना हो जाय

डरते रहो यह ज़िन्दगी बेकार ना हो जाय।
सपने में किसी जीव का अपकार न हो जाय।।

पाया है तन अनमोल सदाचार के लिये।
विषयों में फँस के कहीं अनाचार न हो जाय।।

सेवा करो सब देश की शुभ कर्म हरि भजन।
इतना भी करके पीछे अहंकार ना हो जाय।।

मंज़िल असल मुकाम की तय करनी है तुम्हें।
इस ठग नगरी में आ के गिरफ्तार ना हो जाय।।

'माधव' लगी है बाज़ी माया मोह जाल से।
धोखे में फँस के अबके कहीं हार ना हो जाय।।

सपने में किसी जीव का अपकार ना हो जाय।

❖ ❖ ❖

तुम ढूँढो मुझे गोपाल

तुम ढूँढो मुझे गोपाल मैं खोई गैया तेरी।
सुध लो मेरी गोपाल मैं खोई गैया तेरी।।

पाँच विकार से हाँकी जाए पाँच तत्त्व की ये देही।
बरबस भटकी दूर कहीं मैं चैन न पाऊं अब केरी।।
ये कैसा माया जाल मैं उलझी गैया तेरी।
सुध लो मेरी गोपाल मैं उलझी गैया तेरी।।
तुम ढूँढो मुझे गोपाल मैं खोई गैया तेरी।

जमुना तट ना नंदन बट ना गोपी ग्वाल कोई दीखे।
कुसुम लता ना तेरी छटा ना पाँख पखेरू कोई दीखे।।
अब सांझ भई घनश्याम मैं व्याकुल गैया तेरी।
सुध लो मेरी गोपाल मैं व्याकुल गैया तेरी।।
तुम ढूँढो मुझे गोपाल मैं खोई गैया तेरी।

कित पाऊँ तरुवर की छाऊँ जित छाजे कृष्ण कन्हैया।
मन का ताप शाप भटकन का तुम्हीं हरो हे रास रचैया।।
अब मूक निहारूँ बाट प्रभु जी मैं गैया तेरी।
सुध लो मेरी गोपाल मैं खोई गैया तेरी।।
तुम ढूँढो मुझे गोपाल मैं खोई गैया तेरी।

बंसी के स्वर नाद से टेरो मधुर तान से मुझे पुकारो।
राधा कृष्ण गोविन्द हरीहर मुरली मनोहर नाम तिहारो।।
मुझे उबारो हे गोपाल मैं खोई गैया तेरी।
सुध लो मेरी गोपाल मैं खोई गैया तेरी।।
तुम ढूँढो मुझे गोपाल मैं खोई गैया तेरी।

❖ ❖ ❖

तू तो डूबा हुआ भी तर जाएगा

तू तो डूबा हुआ भी तर जाएगा।
मुख से राम राम राम राम गाये जा।।

बन्दे ना कर किसी की बुराई।
कौन देगा तेरी झूठी गवाही।।
ओ तेरा जीवन व्यर्थ चला जाएगा।
मुख से राम राम राम राम गाये जा।।

पशु तो मर कर भी सौ काम आए।
नर तन यूँ ही भस्म हो जाए।।
ओ तेरा नामो निशां मिट जाएगा।
मुख से राम राम राम राम गाये जा।।

तूने पहना मानुष का चोला।
क्यों ना मुख से तू राम नाम बोला।।
ओ प्रभु पूछेंगे क्या बतलाएगा।
मुख से राम राम राम राम गाये जा।।

झूठी दुनिया से कर ले किनारा।
ये तो मतलब का है जग सारा।।
कहना संतों का मान तर जाएगा।
मुख से राम राम राम राम गाये जा।।

❖ ❖ ❖

तू है स्वामी मेरा मैं हूँ सेवक तेरा निर्विकारा

तू है स्वामी मेरा मैं हूँ सेवक तेरा निर्विकारा
नमस्कार लो देव हमारा।

1. जग उद्धारण को नर तन धारा
तेज पुंज हो ज्ञान भंडारा
आदर्श मूरत कहूँ क्या क्या उपमा करूं पतित उद्धारा
नमस्कार लो देव हमारा।

2. कर्म हीना मैं बल बुद्धि हीना
जल विहीना तड़पती मैं मीना
तू है सागर गुरु प्रेम आगर गुरु दे सहारा
नमस्कार लो देव हमारा।

3. डोरी जीवन की दी हाथ तेरे
कर्णधार तुम्हीं एक मेरे
यह जो नैया मेरी मझधार पड़ी खेवनहारा
नमस्कार लो देव हमारा।

4. सब दर छोड़ तेरे दर आई
एक तुझ से ही आस लगाई
तरस खाना प्रभु न भुलाना विभु मैं तुम्हारा
नमस्कार लो देव हमारा।

तू है स्वामी मेरा मैं हूँ सेवक तेरा निर्विकारा
नमस्कार लो देव हमारा।

❖ ❖ ❖

तेरा रामजी करेंगे बेड़ा पार

तेरा रामजी करेंगे बेड़ा पार, उदासी मन काहे को करे।
काहे को डरे रे .... काहे को डरे।
तेरा रामजी करेंगे बेड़ा पार .....

1. नैया तू करदे प्रभु के हवाले,
लहर लहर हरि आप ही संभाले। – 2
हरि आप ही उतारें तेरा भार,
उदासी मन काहे को करे।। तेरा रामजी ....

2. काबू में मँझधार उसी के,
हाथों में पतवार उसी के। – 2
बाज़ी जीत लेवो चाहे हार,
उदासी मन काहे को करे।। तेरा रामजी ....

3. गर निर्दोष तुझे क्या डर है,
पग पग पर साथी ईश्वर है। – 2
जरा भावना से कीजिये पुकार,
उदासी मन काहे को करे।। तेरा रामजी ....

4. सहज किनारा मिल जाएगा,
परम सहारा मिल जाएगा। – 2
डोरी सौंप दे उसी के सब हाथ,
उदासी मन काहे को करे।। तेरा रामजी ....

❖ ❖ ❖

तेरी बन जैहैं गोविंद गुण गाये से

तेरी बन जैहैं गोविंद गुण गाये से।
गोविन्द गुण गाये से, राम गुण गाये से।

ध्रुव की बन गई, प्रह्लाद की बन गई।
द्रौपदी की बन गई, चीर के बढ़ाये से।
तेरी बन जैहैं गोविंद गुण गाये से।

बाली की बन गई, सुग्रीव की बन गई।
हनुमत की बन गई, सिया-सुधि लाये से।
तेरी बन जैहैं गोविंद गुण गाये से।

नन्द की बन गई, यशोदा की बन गई।
गोपियन की बन गई, माखन के खवाये से।
तेरी बन जैहैं गोविंद गुण गाये से।

गज की बन गई, गीध की बन गई।
केवट की बन गई, नाव पे चढ़ाये से।
तेरी बन जैहैं गोविंद गुण गाये से।

ऊद्धव की बन गई, भीष्म की बन गई।
अर्जुन की बन गई, गीता ज्ञान पाये से।
तेरी बन जैहैं गोविंद गुण गाये से।

तुलसी की बन गई, सूर की बन गई।
मीरा की बन गई गोविन्द के रिझाये से।
तेरी बन जैहैं गोविंद गुण गाये से।

❖ ❖ ❖

तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना

तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना जिसे मैं उठाने के काबिल नहीं हूँ।
मैं आ तो गया हूँ मगर जानता हूँ तेरे दर पे आने के काबिल नहीं हूँ।।

तूने अदा की मुझे ज़िन्दगानी,
महिमा ये तेरी मैंने ना जानी।
कर्ज़दार हूँ तेरे रहम का मैं इतना
कि नज़रें मिलाने के काबिल नहीं हूँ।।
मैं आ तो गया हूँ ....

ये माना कि मालिक हो तुम इस जहां के,
मगर कैसे झोली फैलाऊँ मैं आके।
जो अब तक दिया है वही कम नहीं है,
उसी को निभाने के काबिल नहीं हूँ।।
मैं आ तो गया हूँ ....

तमन्ना यही है कि सिर को झुका लूँ,
दीदार तेरा जी भर के पा लूँ।
सिवा दिल के टुकड़ों के न कुछ पास मेरे,
मैं कुछ भी चढ़ाने के काबिल नहीं हूँ।।
मैं आ तो गया हूँ ....

भटकता हूँ लेकर गुनाहों भरा दिल,
ठिकाना न कोई न है कोई मंज़िल।
हे रब अब तो आओ उबारो मुझे तुम,
मैं और इम्तिहानों के काबिल नहीं हूँ।।
मैं आ तो गया हूँ ....

❖ ❖ ❖

तेरे पूजन को भगवान्

तेरे पूजन को भगवान् बना मन मंदिर आलीशान। ... 2

1. किसने जानी तेरी माया, किसने भेद तुम्हारा पाया। ... 2
हारे ऋषि मुनि कर ध्यान, बना मन मंदिर आलीशान।।
तेरे पूजन को ....

2. तू ही जल में, तू ही थल में, तू ही मन में, तू ही वन में। ... 2
तेरा रूप अनूप महान, बना मन मंदिर आलीशान।।
तेरे पूजन को ....

3. तू हर गुल में, तू बुलबुल में, तू हर डाल के हर पातन में। ... 2
तू हर दिल में मूरतिमान, बना मन मंदिर आलीशान।।
तेरे पूजन को ....

4. तूने राजा रंक बनाए, तूने भिक्षुक राज बिठाए। ... 2
तेरी लीला अजब महान, बना मन मंदिर आलीशान।।
तेरे पूजन को ....

5. झूठे जग की झूठी माया, मूरख इसमें क्यूँ भरमाया। ... 2
कर कुछ जीवन का कल्याण, बना मन मंदिर आलीशान।।
तेरे पूजन को ....

6. तूने सूरज चाँद बनाए, धरती और आकाश बनाए। ... 2
तेरी लीला अपरम्पार, बना मन मंदिर आलीशान।।
तेरे पूजन को ....

❖ ❖ ❖

तेरे फूलों से भी प्यार

तेरे फूलों से भी प्यार तेरे काँटों से भी प्यार।
जो भी देना चाहे दे दे करतार, दुनिया के तारनहार,
दुनिया के तारनहार।

चाहे सुख दे या दुःख, चाहे ख़ुशी दे या ग़म।
मालिक जैसे भी रखेगा वैसे रह लेंगे हम।
चाहे हँसी भरा संसार दे या आँसुओं की धार।
जो भी देना चाहे दे दे करतार, दुनिया के तारनहार,
दुनिया के तारनहार।

हम को दोनों हैं पसंद तेरी धूप और छाँव।
दाता किसी भी दिशा में ले चल ज़िन्दगी की नाव।।
चाहे हमें लगा दे पार या तू डुबा हमें मझधार।
जो भी देना चाहे दे दे करतार, दुनिया के तारनहार,
दुनिया के तारनहार।

चाहे आँधियों की मार दे या ऋतु ये सुहानी।
हम तो प्यार से उठाएँ तेरी हर मेहरबानी।।
मेरे सपनों का संसार, तेरी मर्ज़ी पर निस्सार।
जो भी देना चाहे दे दे करतार, दुनिया के तारनहार,
दुनिया के तारनहार।

❖ ❖ ❖

तेरे नाम का सुमिरन करके

तेरे नाम का सुमिरन करके मेरे मन में सुख भर आया।
तेरी दया को मैंने पाया तेरी कृपा को मैंने पाया।।

1. दुनिया की ठोकर खाकर जब हुआ कभी बेसहारा।
न पा के अपना कोई जब मैंने तुझे पुकारा।।
हे नाथ मेरे सिर ऊपर तूने अमृत बरसाया।
तेरी दया को मैंने पाया तेरी कृपा को मैंने पाया।।

2. भवसागर की लहरों में भटकी जब मेरी नैया।
तट छूना भी मुश्किल था न दीखे कोई खेवैया।।
तू लहर का रूप बना कर मेरी नाव किनारे लाया।
तेरी दया को मैंने पाया तेरी कृपा को मैंने पाया।।

3. तू संग में था नित मेरे ये नैना देख ना पाए।
चंचल माया के रंग में ये नयन रहे भरमाए।।
जितनी भी बार गिरा हूँ तूने पग पग मुझे उठाया।
तेरी दया को मैंने पाया तेरी कृपा को मैंने पाया।।

4. हर तरफ तुम्हीं हो मेरे हर तरफ तेरा उजियारा।
निर्लेप प्रभुजी मेरे हर रूप तुम्हीं ने धारा।।
तेरी शरण में आके दाता तेरा तुझको ही चढ़ाया।
तेरी दया को मैंने पाया तेरी कृपा को मैंने पाया।।

❖ ❖ ❖

तेरे दर को छोड़कर

तेरे दर को छोड़कर किस दर जाऊँ मैं।
सुनता मेरी कौन है किसे सुनाऊँ मैं।।

जब से याद भुलाई तेरी लाखों कष्ट उठाए हैं।
क्या जानूँ जीवन में मैंने कितने पाप कमाए हैं।।
हूँ शर्मिंदा आप से क्या बतलाऊँ मैं।
तेरे दर को छोड़कर किस दर जाऊँ मैं।।

मेरे पाप कर्म ही तुझ से प्रीत ना करने देते हैं।
कभी जो चाहूँ मिलूं आपसे रोक मुझे ये लेते हैं।।
कैसे स्वामी आपके दर्शन पाऊँ मैं।
तेरे दर को छोड़कर किस दर जाऊँ मैं।।

तू है नाथ वरों का दाता तुझसे सब वर पाते हैं।
ऋषि मुनि और योगी सारे तेरे ही गुण गाते हैं।।
छींटा दे दो ज्ञान का, होश में आऊँ मैं।
तेरे दर को छोड़कर किस दर जाऊँ मैं।।

जो बीती सो बीती लेकिन बाकी उम्र सँभालूँ मैं।
प्रेम पाश में बँधा आपके गीत प्रेम के गा लूँ मैं।।
जितना जीवन शेष है सफल बनाऊँ मैं।
तेरे दर को छोड़कर किस दर जाऊँ मैं।।
सुनता मेरी कौन है किसे सुनाऊँ मैं।।

❖ ❖ ❖

तोरा मन दर्पण कहलाये

तोरा मन दर्पण कहलाये ... ए ... (2)
भले बुरे सारे कर्मों को देखे और दिखाए।
तोरा मन दर्पण कहलाये।

1. मन ही देवता मन ही ईश्वर, मन से बड़ा न कोय।
मन उजियारा जब जब फैले जग उजियारा होय।।
इस उजले दर्पण पर प्राणी धूल न जमने पाये।
तोरा मन दर्पण ...

2. सुख की कलियाँ दु:ख के काँटे, मन सब का आधार। (2)
मन से कोई बात छुपे न मन के नयन हज़ार।।
जग से चाहे भाग ले कोई, मन से भाग न पाये।
तोरा मन दर्पण ...

3. तन की दौलत ढलती छाया, मन का धन अनमोल। (2)
तन के कारण मन के धन को मत माटी में रोल।।
मन की कदर भुलाने वाला, हीरा जनम गँवाए।
तोरा मन दर्पण ...

❖ ❖ ❖

दर्शन दो श्री राम

दर्शन दो श्री राम नाथ मोरी अँखियाँ प्यासी रे।
मन मंदिर की ज्योति जगा दो मन के वासी रे।।
दर्शन दो श्री राम ....

मंदिर मंदिर मूरत तेरी, फिर भी ना दीखे सूरत तेरी।
युग बीते ना आई मिलन की पूरणमासी रे।।
दर्शन दो श्री राम ....

द्वार दया का जब तू खोले, पंचम स्वर में गूंगा बोले।
अंधा देखे लंगड़ा चलकर पहुँचे काशी रे।।
दर्शन दो श्री राम ....

पानी पीकर प्यास बुझाऊँ, नैनन को कैसे समझाऊँ।
आँख मिचौनी छोड़ो अब तो घट घट वासी रे।।
दर्शन दो श्री राम ....

निर्बल के बल धन निर्धन के, तुम रखवारे भक्त जनन के।
तेरी दया से सब कुछ पाऊँ, मिटे उदासी रे।।
दर्शन दो श्री राम ....

नाम जपें पर तुझे ना जानें, उनको भी तू अपना माने।
तेरी दया का अंत नहीं है, हे दुःख नाशी रे।।
दर्शन दो श्री राम ....

❖ ❖ ❖

दाता एक राम भिखारी सारी दुनिया

दाता एक राम भिखारी सारी दुनिया।
राम एक देवता पुजारी सारी दुनिया।।
दाता एक राम.....

1. द्वारे पे उसके जाके कोई भी पुकारता।
परम कृपा दे अपनी भव से उबारता।।
ऐसे दीनानाथ पर बलिहारी सारी दुनिया।
दाता एक राम.....

2. दो दिन का जीवन प्राणी कर ले विचार तू।
प्यारे प्रभु को अपने मन में निहार तू।।
बिना हरि नाम के दुखियारी सारी दुनिया।
दाता एक राम.....

3. नाम का प्रकाश जब अन्दर जगाएगा।
प्यारे श्रीराम का तू दर्शन पाएगा।।
ज्योति से जिसकी है उजियारी सारी दुनिया।
दाता एक राम.....

❖ ❖ ❖

दाता तेरे चरणों की

दाता तेरे चरणों की, गर धूल जो मिल जाए।
सच कहता हूँ गुरुवर, तकदीर बदल जाए।।

1. सुनते हैं तेरी रहमत, दिन रात बरसती है।
फिर भी तेरे दर्शन को, नज़रें क्यूँ तरसती हैं।।
इक बूँद जो मिल जाए, मन की कली खिल जाए।
सच कहता हूँ गुरुवर, तकदीर बदल जाए।।

2. ये मन बड़ा चंचल है, कैसे तेरा भजन करूँ।
इत उत ये भटकता है, कितना भी मैं जतन करूँ।।
जितना इसे समझाऊं, उतना ही मचल जाए।
सच कहता हूँ गुरुवर, तकदीर बदल जाए।।

3. रस्ते से अगर भटकूं, तू मुझ को दिशा देना।
नज़रों से गिराना ना, चाहे जो भी सज़ा देना।।
नज़रों से जो गिर जाए, मुश्किल है संभल पाए।
सच कहता हूँ गुरुवर, तकदीर बदल जाए।।

4. दाता इस जीवन की, बस एक तमन्ना है।
तेरी याद में जीना है, तेरी याद में मरना है।।
जब अंत समय आए, दर्शन तेरा मिल जाए।
सच कहता हूं गुरुवर, तकदीर बदल जाए।।

❖ ❖ ❖

नगरी हो अयोध्या सी

नगरी हो अयोध्या सी, रघुकुल सा घराना हो।
चरण हों राघव के, जहाँ मेरा ठिकाना हो।

लक्ष्मण सा भाई हो, कौशल्या माई हो।
स्वामी तुम्हारे जैसा, मेरा रघुराई हो।
स्वामी तुम्हारे जैसा, मेरा रघुराई हो।
नगरी हो अयोध्या सी .....

हो त्याग भरत जैसा, सीता सी नारी हो।
लव कुश के जैसी संतान हमारी हो।
लव कुश के जैसी संतान हमारी हो।

श्रद्धा हो श्रवण सी, शबरी सी भक्ति हो।
हनुमत के जैसी निष्ठा और शक्ति हो।
हनुमत के जैसी निष्ठा और शक्ति हो।

मेरी जीवन नैया हो, प्रभु राम खेवैया हो।
राम कृपा की सदा मेरे सिर पर छैया हो।
राम कृपा की सदा मेरे सिर पर छैया हो।

सरयू का किनारा हो, निर्मल जल धारा हो।
अंत समय भगवन् मुझे दर्श तुम्हारा हो।
अंत समय भगवन् मुझे दर्श तुम्हारा हो।

नगरी हो अयोध्या सी, रघुकुल सा घराना हो।
चरण हों राघव के, जहाँ मेरा ठिकाना हो।

❖ ❖ ❖

नमस्कार भगवान् तुम्हें

नमस्कार भगवान् तुम्हें भक्तों का बारम्बार हो।
श्रद्धारूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो।।

1. तुम कण कण में बसे हुए हो तुझ में जगत समाया है।
तिनका हो चाहे पर्वत हो सभी तुम्हारी माया है।।
तुम दुनिया के हर प्राणी के जीवन का आधार हो।
श्रद्धारूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो।।
नमस्कार भगवान् तुम्हें .....

2. सबके सच्चे पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं जगत की माता हो।
भाई बंधु सखा सहायक रक्षक पोषक दाता हो।।
परम दयालु परम कृपालु करुणा के भण्डार हो।
श्रद्धारूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो।।
नमस्कार भगवान् तुम्हें .....

3. ऋषि मुनि योगी जन सारे तुझ से ही बल पाते हैं।
क्या राजा क्या रंक तुम्हारे दर पे सीस झुकाते हैं।।
चींटी से लेकर हाथी तक सब के सिरजनहार हो।
श्रद्धारूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो।।
नमस्कार भगवान् तुम्हें .....

4. तूफानों से घिरे पथिक अब तुम ही एक सहारा हो।
डगमग डगमग नैया डोले तुम ही नाथ किनारा हो।।
तुम खेवट हो इस नैया के और तुम ही पतवार हो।
श्रद्धारूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो।।

नमस्कार भगवान् तुम्हें भक्तों का बारम्बार हो।
श्रद्धारूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो।।

❖ ❖ ❖

नाम लिया जिनने हरि का

नाम लिया हरि का जिनने तिन और का नाम लिया न लिया।
सेवा दुखियों की जिसने की तिन धन का दान किया न किया।।

जड़ चेतन सब जगजीवन को जिसने अपने सम जान सदा,
सबका परिपालन नित्य किया, तिन विप्रन दान दिया न दिया।
नाम लिया जिनने हरि का .....

काम किये परमारथ के, तन से मन से धन से करके,
जग अंदर कीरति छाय रही, दिन च्यार बिसेस जिया न जिया।
नाम लिया जिनने हरि का .....

जिसके घर में हरि की चर्चा, नित होवत है दिन रात सदा,
सत्संग कथामृत पान किया, तिन तीरथ नीर पिया न पिया।
नाम लिया जिनने हरि का ....

गुरु के उपदेस समागम से, जिसने अपने घट भीतर में,
ब्रह्मानंद रूप को जान लिया, तिन साधन योग किया न किया।
नाम लिया जिनने हरि का .....

❖ ❖ ❖

ना ये तेरा ना ये मेरा

ना ये तेरा ना ये मेरा, मंदिर है भगवान् का।
पानी उसका भूमि उसी की, सब कुछ उसी महान का।।

हम सब खेल खिलोने उसके खेल रहा करतार रे।
उसकी ज्योति सबमें चमके सब में उसका प्यार रे।।
मन मंदिर में दर्शन कर ले उन प्राणों के प्राण का।
पानी उसका भूमि उसी की, सब कुछ उसी महान का।।
ना ये तेरा ... ना ये मेरा ...

तीरथ जाए मंदिर जाए अनगिन देव मनाए रे।
दीन रूप में राम सामने देख के नयन फिराए रे।।
मन की आँखें खुल जाएँ तो क्या करना हमें ज्ञान का।
पानी उसका भूमि उसी की, सब कुछ उसी महान का।।
ना ये तेरा ... ना ये मेरा ....

कौन है ऊँचा कौन है नीचा सब हैं एक समान रे।
प्रेम की ज्योति जगा हृदय में सब में प्रभु पहचान रे।।
सरल हृदय को शरण में राखे हरि भोले नादान का।
पानी उसका भूमि उसी की, सब कुछ उसी महान का।।
ना ये तेरा .... ना ये मेरा ....

❖ ❖ ❖

पाइयाँ तेरे दर तों मैं रहमतां हज़ारां

पाइयाँ तेरे दर तों मैं रहमतां हज़ारां,
शुक्र गुज़ारां तेरा शुक्र गुज़ारां। (2)

कौड़ियाँ दा मुल नहिं सी, हीरेयां दा पै गया।
ज़दों दा मैं दाता तेरे चरणां विच बै गया।। (2)
राम राम बोल दियाँ दिलां दियां तारां।
शुक्र गुज़ारां तेरा शुक्र गुज़ारां।।

दर दर रुलदा सी किसे ना सँभालिया।
मेहर कीती सद्गुरु चरणां नाल ला लया।।
क्यों ना दाता तेरे उत्ते तन मन वारां।
शुक्र गुज़ारां तेरा शुक्र गुज़ारां।।

रहमतां नूं देख अंखाँ हस पईयां रोंदियाँ।
साडे कोलों दाता तेरी सिफ़्तां नहियों होन्दियाँ।।
चंगे वेले सुण लइयां साडियाँ पुकारां।
शुक्र गुज़ारां तेरा शुक्र गुज़ारां।।

सुख देवें दुःख देवें झोली विच पा लवां।
दुखां नूं मिला के मैं सुखां नाल ला लवां।।
ज़ेहड़ा वेला आवे ओनूं हस के गुज़ारां।
शुक्र गुज़ारां तेरा शुक्र गुज़ारां।।

❖ ❖ ❖

पायोजी म्हे तो राम रतन धन पायो

पायोजी म्हे तो राम रतन धन पायो।।

वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो।।
पायोजी म्हे तो ....

जनम जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायो।।
पायोजी म्हे तो ....

खरच ना खूँटे चोर ना लूटे, दिन दिन बढ़त सवायो।।
पायोजी म्हे तो ....

सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।।
पायोजी म्हे तो ....

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरष हरष जस गायो।।
पायोजी म्हे तो ....

पायो जी म्हें तो राम रतन धन पायो।।

❖ ❖ ❖

पितु मात सहायक

पितु मात सहायक स्वामी सखा तुम ही इक नाथ हमारे हो।
जिनके कछु और अधार नहीं तिनके तुम ही रखवारे हो।।
सब भाँति सदा सुखदायक हो दुःख दुर्गुण नाशन हारे हो।
प्रतिपाल करो सिगरे जग को अतिशय करुणा उर धारे हो।।
भुलि हैं हम ही तुमको तुम तो हमरी सुध नाहिं बिसारे हो।
उपकारन को कछु अंत नहीं छिन ही छिन जो विस्तारे हो।।
महाराज महा महिमा तुम्हरी समझे विरले बुधवारे हो।
सुख शांति निकेतन प्रेम निधे मन मंदिर के उजियारे हो।।
यहि जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे हो।
तुम सों प्रभु पाय प्रताप हरि केहि के अब और सहारे हो।।
पितु मात सहायक स्वामी सखा .....

❖ ❖ ❖

हर स्वर मेरा झंकार करे

हर स्वर मेरा झंकार करे, हर श्वास मेरा उच्चार करे।
मेरा हर रोम पुकार करे, मैं तेरा माँ मैं तेरा माँ।।
मन-मृदंग के सब तालों में, हृद्-तन्त्री के सब तारों में।
ध्वनि एक यही गुंजार करे, मैं तेरा माँ, मैं तेरा माँ।।
जीवन के शरद् बसन्तों में, गर्मी जल शिशिर हेमन्तों में।
हृद्-कुँज में कोयल कूक करे मैं तेरा माँ मैं तेरा माँ।।
आवेदन चरणों में मेरा, टूटे माँ सीमा का घेरा।
पुलकित हो करुण पुकार करे, मैं तेरा माँ, मैं तेरा माँ।।

❖ ❖ ❖

प्रबल प्रेम के पाले पड़कर

प्रबल प्रेम के पाले पड़कर प्रभु को नियम बदलते देखा।
उनका मान भले टल जाए जन का मान ना टलते देखा।।
जिनकी केवल कृपा दृष्टि पर सकल विश्व को पलते देखा।
उनको गोकुल के गोरस पर सौ सौ बार मचलते देखा।।
जिनके चरण कमल कमला के कर तल से ना निकलते देखा।
उनको ब्रज करील कुंजों में कंटक पथ पर चलते देखा।।
जिनका ध्यान विरंच शम्भु सनकादिक से न सँभलते देखा।
उनको ग्वाल सखा मंडल में लेकर गेंद उछलते देखा।।
जिनके बंक भृकुटि के बल से सागर सप्त उबलते देखा।
उनको ही यशोदा के भय से अश्रु बिंदु दृग ढलते देखा।।

❖ ❖ ❖

सत् गुरुदेव श्रद्धा सुमन अर्पणः

मेरे गुरुदेव चरणों पर, सुमन श्रद्धा के अर्पित हैं।
तेरी ही देन है जो है, तेरे चरणों पे अर्पित है।।
न प्रीति है प्रतीति है, नहीं पूजन की शक्ति है।
मेरा यह मन मेरा यह तन, मेरा जीवन समर्पित है।।
तेरी इच्छाएँ हों मेरी मेरे सब कर्म हों तेरे।
बना ले यंत्र अब मुझको मेरा कण कण समर्पित है।।
तुम्हीं हो भाव में मेरे विचारों में पुकारों में।
तेरे चरणों पे हे गुरुवर मेरा सर्वस्व अर्पित है।।

❖ ❖ ❖

प्रभु चरनन पे बलि जाऊँ

प्रभु चरनन पे बलि जाऊँ।

मैं दुखिया कछु पास ना मोरे का तव भेंट चढ़ाऊँ।
जो कछु है सब देन तुम्हारी, अरपन करत लजाऊँ।।
प्रभु चरनन पे बलि जाऊँ।

परम अपावन पतित सदा को परसत पद सकुचाऊँ।
दूरिहि ते लहि लाहु दरस को, सादर सीस नवाऊँ।।
प्रभु चरनन पे बलि जाऊँ।

भक्ति भाव को भेद न जानउँ केहि विधि विनय सुनाऊँ।
पद रज परी द्वार पै तेरे, सिर धरि अति हरषाऊँ।।
प्रभु चरनन पे बलि जाऊँ।

'रामसरन' सेवक तू स्वामी, सेवा करि न अघाऊँ।
निबहै पावन नाम सदा यह, जनम जहाँ जहाँ पाऊँ।।
प्रभु चरनन पे बलि जाऊँ।

❖ ❖ ❖

प्रभु मेरे जीवन का उद्धार कर दो

प्रभु मेरे जीवन का उद्धार कर दो।
भँवर में है नैया इसे पार कर दो।

मेरी इन्द्रियाँ हों सदा मेरे वश में।
मेरे मन पे मेरा अधिकार कर दो।
प्रभु मेरे जीवन का ...

मैं गाऊं सदा वेद की ही ऋचाएँ।
कि तन मन में वेदों का संचार कर दो।
प्रभु मेरे जीवन का ...

मैं समझूँ न जग में किसी को बेगाना।
मुझ में विश्व भर के लिये प्यार भर दो।
प्रभु मेरे जीवन का ...

पथिक राह में हो कोई दीन दुखिया।
मदद के लिये मुझ को तैयार कर दो।
प्रभु मेरे जीवन का ...

❖ ❖ ❖

प्रभु हम भी शरणागत हैं

प्रभु हम भी शरणागत हैं स्वीकार करो तो जानें।
अब हमें पतित से पावन सरकार करो तो जानें।।

ज्ञानी तुममें तन्मय है, ध्यानी तुममें ही लय है।
हम अज्ञानी चंचल चित, उपचार करो तो जानें।।
प्रभु हम भी शरणागत हैं स्वीकार करो तो जानें।

प्रेमी जन तुम को पाते, तुम भक्ति भाव वश आते।
हम कलुष हृदय के कलुषित, निस्तार करो तो जानें।।
प्रभु हम भी शरणागत हैं स्वीकार करो तो जानें।

क्या मुख ले विनय सुनाएँ, हम कैसे तुम को भाएँ।
अगणित अपराध किये हैं, उद्धार करो तो जानें।।
प्रभु हम भी शरणागत हैं स्वीकार करो तो जानें।

जीवन नैया जर्जर है, पल पल विनाश का डर है।
ऐसे भी एक पथिक को भव पार करो तो जानें।।
प्रभु हम भी शरणागत हैं स्वीकार करो तो जानें।

❖ ❖ ❖

प्रभुजी अब तो कर दो पार

प्रभुजी अब तो कर दो पार, मुझे इस भवसागर से पार।
माया छोड़ी मेवा छोड़ी, छोड़ दिया घर बार।
प्रभुजी अब तो कर दो पार।

काम को छोड़ा क्रोध को छोड़ा, गर्व दम्भ अभिमान को छोड़ा।
लोभ मोह के जाल को छोड़ा, छोड़ दिया अहंकार।
प्रभुजी अब तो कर दो पार।

इष्ट मित्र हर साथी छोड़ा, बंधु बांधव से नाता तोड़ा।
घर और सब परिवार को छोड़ा, छोड़ा सब का प्यार।
प्रभुजी अब तो कर दो पार।

दु:ख भी दिया है सुख भी दिया है, वक्त पड़े पर साथ दिया है।
हाथ जोड़कर खड़ा हुआ हूँ, सब कुछ है स्वीकार।
प्रभुजी अब तो कर दो पार।

जो भी आया मान मिला है, ज्ञान ध्यान सम्मान मिला है।
दीर्घ काल से पड़ा हुआ हूँ, गुरुवर तेरे द्वार।
प्रभुजी अब तो कर दो पार।

❖ ❖ ❖

प्रभुजी तुम न मुझे दुतकारो

प्रभुजी तुम न मुझे दुतकारो।
अब तो शरण तिहारी आयो, खोटो खरो नकारो।।

माना तन है मलिन, मलिन मन, मलिन कर्म सब मेरे।
पर प्रभु-चरन तरंगिन देगी, धो सब कलुष घनेरे।।
प्रभुजी तुम न मुझे दुतकारो।

जहाँ गया सब ने दुतकारा, व्यथा न मेरी जानी।
मुझ पर कैसी बीत रही है, पीड़ा कब पहिचानी।।
प्रभुजी तुम न मुझे दुतकारो।

सब अपने अपने में खोये, कौन सुनैगो मेरी।
पिघल सका कब हृदय किसी का, बिनती की बहुतेरी।।
प्रभुजी तुम न मुझे दुतकारो।

जन जन से मैं हुआ तिरस्कृत, तुम मत दूर भगाओ।
अशरण शरण, समझ निज सेवक, अपनी शरण लगाओ।।
प्रभुजी तुम न मुझे दुतकारो।

❖ ❖ ❖

प्रभुजी मेरे औगुन चित ना धरो

प्रभुजी मेरे औगुन चित ना धरो।
समदरसी प्रभु नाम तिहारो, अपने पनहि करो।।
प्रभुजी मेरे औगुन चित ना धरो।

इक लोहा पूजा में राखत इक घर बधिक परो।
यह दुविधा पारस नहिं जानत, कंचन करत खरो।।
प्रभुजी मेरे औगुन चित ना धरो।

इक नदिया इक नार कहावत, मैलो नीर भरो।
जब मिलिकै दोउ एक बरन भए, सुरसरि नाम परो।।
प्रभुजी मेरे औगुन चित ना धरो।

एक जीव इक ब्रह्म कहावत, 'सूर' स्याम झगरो।
अबकी बेर मोहि पार उतारो, नहिं पन जात टरो।।
प्रभुजी मेरे औगुन चित ना धरो।

❖ ❖ ❖

प्रेम मुदित मन से कहो राम राम राम

प्रेम मुदित मन से कहो राम राम राम।
श्री राम राम राम श्री राम राम राम।।

पाप कटें दुःख मिटें लेत राम नाम।
भव समुद्र सुखद नाव एक राम नाम।।

परम शान्ति सुख निधान नित्य राम नाम।
निराधार को अधार एक राम नाम।।

परम गोप्य परम इष्ट मन्त्र राम नाम।
सन्त हृदय सदा बसत एक राम नाम।।

माता पिता बंधु सखा सबै राम नाम।
भगत जनन जीवन धन एक राम नाम।।

काशी मरत मुक्ति करत दिव्य राम नाम।
महादेव सतत जपत एक राम नाम।।

❖ ❖ ❖

बजरंग बली मेरी नाव चली

बजरंग बली मेरी नाव चली जरा चप्पू कृपा का लगा देना।
मुझे रोग व शोक ने घेर लिया मेरे ताप को नाथ मिटा देना।।

मैं दास तो आपका जन्म से हूँ, बालक और शिष्य भी धर्म से हूँ।
बेशर्म विमुख निज कर्म से हूँ, चित्त से मेरे दोष भुला देना।।
बजरंग बली मेरी नाव चली जरा चप्पू कृपा का लगा देना।

दुर्बल हूँ, दीन गरीब हूँ मैं, निज कर्म क्रिया गतिहीन हूँ मैं।
बलबीर तेरे आधीन हूँ मैं, मेरी बिगड़ी नाथ बना देना।।
बजरंग बली मेरी नाव चली जरा चप्पू कृपा का लगा देना।

बल देके मुझे निर्भय कर दो, भक्ति मेरी अक्षय कर दो।
मेरे जीवन को सुखमय कर दो, संजीवनी ला के पिला देना।।
बजरंग बली मेरी नाव चली जरा चप्पू कृपा का लगा देना।

करुणानिधि आपका नाम भी है, सेवक यह राधेश्याम भी है।
इसके अतिरिक्त यह काम भी है, श्रीराम से मुझको मिला देना।।
बजरंग बली मेरी नाव चली जरा चप्पू कृपा का लगा देना।

❖ ❖ ❖

बंद कर खिड़की भले ही द्वार

बंद कर खिड़की भले ही द्वार, कितने भी तू ताले डार,
इक दिन तोड़ के पिंजरा पंछी उड़ जाना,
कर ले जतन हज़ार पंछी उड़ जाना, कि पंछी उड़ जाना।

महल धरे के धरे रहेंगे, धन दौलत सब पड़े रहेंगे, (2)
साथ चलेगा कोई ना तेरे, दूर दूर सब खड़े रहेंगे।
कर ले सोच विचार, पंछी उड़ जाना, (2)
कि पंछी उड़ जाना, कि पंछी उड़ जाना।।

ईश्वर की कर भक्ति बन्दे, छोड़ दे सारे पाप के धंधे, (2)
मोह माया के जाल सुनहरे, सब के सब फाँसी के फंदे।
जप ले कृष्ण मुरार, पंछी उड़ जाना, (2)
कि पंछी उड़ जाना, कि पंछी उड़ जाना।।

कर ले कुछ तो नेक कमाई, आखिर तेरे काम ये आई, (2)
लाख चौरासी जून भोग के, मानस देह ये तूने पाई।
करता क्यूँ बेकार, पंछी उड़ जाना, (2)
कि पंछी उड़ जाना, कि पंछी उड़ जाना।।

वक्त अभी है बात मान ले, संत गुणी जन से तू जान ले, (2)
छोड़ दे झूठे ताने बाने, परमेश्वर को सत्य जान ले।
मिलेंगे फिर करतार, पंछी उड़ जाना, (2)
कि पंछी उड़ जाना, कि पंछी उड़ जाना।।

जप ले प्रभु ही परम आत्मा, खुल जाएगा द्वार सातवाँ, (2)
फिर ना पिंजरा ना ही पंछी, जन्म मरण का होगा खात्मा।
भवसागर कर पार, पंछी उड़ जाना, (2)
कि पंछी उड़ जाना, कि पंछी उड़ जाना।।

बंद कर खिड़की भले ही द्वार, कितने भी तू ताले डार,
इक दिन तोड़ के पिंजरा पंछी उड़ जाना,
कर ले जतन हज़ार पंछी उड़ जाना, कि पंछी उड़ जाना।
कि पंछी उड़ जाना, कि पंछी उड़ जाना।।

❖ ❖ ❖

भगत भक्ति से तारे हैं

भगत भक्ति से तारे हैं, कठिन है तारना मेरा।
मगर इतना भरोसा है, दयालु नाम है तेरा।।

कठिन है वेग भवसिंधु, बहा जाता हूँ मैं इसमें।
न केवट है न साथी है, सहारा एक है तेरा।।

महाकामी व क्रोधी हूँ, सदा मैं मान मदमाता।
नहीं थकता है हरगिज़, पाप करने से यह मन मेरा।।

पड़ी नैय्या भंवर जल में, न चप्पू है न बल्ली है।
पुकारें दीन की सुन लो, करो उस पार यह बेड़ा।।

❖ ❖ ❖

भगवान् मेरी नैया उस पार लगा देना

भगवान् मेरी नैया उस पार लगा देना।
अब तक तो निभाया है आगे भी निभा देना।।

छल बल के साथ माया घेरे जो आ के मुझ को।
तुम देखते ना रहना, झट आ के बचा लेना।।

सम्भव है झंझटों में मैं तुम को भूल जाऊँ।
पर नाथ कहीं तुम भी मुझको ना भुला देना।।

तुम देव मैं आराधक, तुम इष्ट मैं पुजारी।
यह बात अगर सच है सच कर के दिखा देना।।

बन बन के मैं पपीहा पी पी रटा करूँगा।
तुम स्वाति बूँद बनकर प्यासे पे दया करना।।

मैं मोर बन के मोहन नाचा करूँगा बन में।
तुम शाम घटा बन कर उस बन में उठा करना।।

भगवान् मेरी नैया उस पार लगा देना।।

❖ ❖ ❖

भज मन राम चरण सुखदाई

भज मन राम चरण सुखदाई।

जिन चरणन से निकसि सुरसरि शंकर जटा समाई।
जटा शंकरी नाम पड्यो है त्रिभुवन तारन आई।।
भज मन राम चरण सुखदाई।

जिन चरणन की चरण पादुका भरत रहे लव लाई।
सोइ चरण केवट धोइ लीने तब हरि नाव चढ़ाई।।
भज मन राम चरण सुखदाई।

सोइ चरण संतन जन सेवत सदा रहत सुखदाई।
सोइ चरण गौतम ऋषि नारी परसि परम पद पाई।।
भज मन राम चरण सुखदाई।

दण्डक वन प्रभु पावन कीन्हो ऋषियन त्रास मिटाई।
सोई प्रभु त्रिलोक के स्वामी कनक मृगा सँग धाई।।
भज मन राम चरण सुखदाई।

कपि सुग्रीव बंधु भय ब्याकुल तिन्ह जय छत्र धराई।
रिपु को अनुज बिभीषण निसिचर परसत लंका पाई।।
भज मन राम चरण सुखदाई।

सिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक सेष सहस मुख गाई।
तुलसिदास मारुत-सुत की प्रभु निज मुख करत बड़ाई।।
भज मन राम चरण सुखदाई।

❖ ❖ ❖

भला किसी का कर ना सको

भला किसी का कर ना सको तो बुरा किसी का मत करना।
पुष्प नहीं बन सकते हो तो काँटे बन कर मत रहना।।

1. बन न सको भगवान् अगर तुम, कम से कम इन्सान बनो।
नहीं कभी शैतान बनो तुम नहीं कभी हैवान बनो।।
सदाचार अपना न सको तो पापों में पग मत रखना।
पुष्प नहीं बन सकते हो तो काँटे बन कर मत रहना।।

2. सत्य वचन न बोल सको तो झूठ कभी भी मत बोलो।
मौन रहो तो ही अच्छा कम से कम विष तो मत घोलो।।
बोलो यदि तुम पहले तोलो फिर मुख को खोला करना।
पुष्प नहीं बन सकते हो तो काँटे बन कर मत रहना।।

3. घर न किसी का बसा सको तो झोपड़ियाँ ना जला देना।
मरहम पट्टी कर न सको तो घाव नमक न लगा देना।।
दीपक बन कर जल न सको तो अँधियारा भी मत करना।
पुष्प नहीं बन सकते हो तो काँटे बन कर मत रहना।।

4. अमृत पिला सको न किसी को ज़हर पिलाते भी डरना।
धीरज बँधा नहीं सकते तो घाव किसी के मत करना।।
राम नाम की माला लेकर सुबह शाम भजन करना।
पुष्प नहीं बन सकते हो तो काँटे बन कर मत रहना।।

5. सच्चाई की राह में बेशक कष्ट अनेकों मिलते हैं।
पर काँटों के बीच में देखो फूल हमेशा खिलते हैं।।
सूरज की भाँति खुद जलकर सब जग को रोशन करना।
पुष्प नहीं बन सकते हो तो काँटे बन कर मत रहना।।

भला किसी का कर न सको तो बुरा किसी का मत करना।
पुष्प नहीं बन सकते हो तो काँटे बन कर मत रहना।।

❖ ❖ ❖

मन मैला और तन को धोये

मन मैला और तन को धोये।
फूल को चाहे काँटे बोये, काँटे बोये।।
मन मैला ...

करे दिखावा भक्ति का तू उजली ओढ़े चादरिया।
भीतर से मन साफ किया ना बाहर माँगे गागरिया।।
परमेश्वर नित द्वार पे आया तू भोला रहा सोये।
मन मैला ...

कभी न मन मंदिर में तूने प्रेम की ज्योत जलाई।
सुख पाने तू दर दर भटका जनम हुआ दुखदाई।।
अब भी नाम सुमिरि ले हरि का जनम वृथा क्यूँ खोये।
मन मैला ...

श्वासों का अनमोल खज़ाना दिन दिन लुटता जाये।
मोती लेने आया तट पे सीप से मन बहलाये।।
साँचा सुख तो वो ही पाये शरण प्रभु की होये।
मन मैला .....

मनका राम नाम का फेर

मनका राम नाम का फेर।

हिय हुलसत मन मोद बढ़त अति छीन होत अघ ढेर।
अनुपम मधुर सुखद हरि चिन्तन काटत कष्ट घनेर।।
मनका राम नाम का फेर।

राम नाम की सुंदर तरनी तारत रंक कुबेर।
ठग ठाकुर नर नारि कुचाली जे ध्यावहिं ह्वै चेर।।
मनका राम नाम का फेर।

अपनो आपो खोय भली विधि सबमें रामहि हेर।
राम नाम की मधुर मधुर ध्वनि स्वांस स्वांस में टेर।।
मनका राम नाम का फेर।

सद्गुरु सरन सुलभ करि दासहिं मेट्यो मन को फेर।
'रामसरन' बिस्वास भयो अब प्रभु करिहैं भव तेर।।
मनका राम नाम का फेर।

❖ ❖ ❖

महामंत्र है ये

महामंत्र है ये जपाकर जपाकर,
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्।।

जो कि दुष्टों ने लोहे का खम्भा रचा था।
तो निर्दोष प्रह्लाद क्योंकर बचा था।
रटा था यही नाम दिल से उसी ने।
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्।।

जो लगी आग लंका में हलचल मची थी।
तो कुटिया विभीषण का क्योंकर बची थी।
लिखा था यही नाम कुटिया पे उसकी।
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्।।

कहो नाथ शबरी के घर कैसे आए।
ओ' आये तो फिर बेर झूठे क्यों खाये।।
जुबां पे यही था हृदय में यही था।
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्।।

हलाहल का मीरा ने प्याला पिया था।
कहो विष से अमृत वो कैसे हुआ था।
दिवानी जो मीरा इसी नाम की थी।
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्।।

सभा में खड़ी द्रोपदी रो रही थी।
ओ' रो रो के आँसू से मुख धो रही थी।
उचारा था दिल से इसी नाम को बस।
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्।।

हरि ॐ में इतनी शक्ति भरी है।
गरुड़ छोड़ धाए न देरी करी है।
रचे थे यही रंग रंगीले उसी ने।
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्।।

महामंत्र है ये जपाकर जपाकर।
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्।।

❖ ❖ ❖

माँ तू प्रेम सुधा बरसा दे

माँ तू प्रेम सुधा बरसा दे।
बूँद बूँद से सूखी कलियाँ मन की आज खिला दे।
माँ तू प्रेम सुधा बरसा दे।।

ओत प्रोत हो जीवन धारा, तेरे दिव्य मिलन के द्वारा।
पल पल छिन-छिन वत्सलता से, अमृत रस बरसा दे।
माँ तू प्रेम सुधा बरसा दे।।

दिव्य कर्म में दिव्य वचन में, मन मानस के कंज पुंज में।
सौरभ बन कर प्रेममयी माँ, एक बार मुसका दे।
माँ तू प्रेम सुधा बरसा दे।।

स्नेहामृत का पेय पिला दे, जीवन को आनन्द बना दे।
उर अन्तर की अमर ज्योति में, अपनी छवि दरसा दे।
माँ तू प्रेम सुधा बरसा दे।।

❖ ❖ ❖

माँ तेरे चरणों में हम शीश झुकाते हैं

माँ तेरे चरणों में हम शीश झुकाते हैं।
श्रद्धा पूरित होकर दो अश्रु चढ़ाते हैं।।

1. झंकार करो ऐसी सद्भाव उभर आयें।
हुंकार भरो ऐसी दुर्भाव उखड़ जायें।।
सन्मार्ग न छोड़ेंगे हम शपथ उठाते हैं।
श्रद्धा पूरित होकर दो अश्रु चढ़ाते हैं।।
माँ तेरे चरणों ... ...

2. यदि स्वार्थ हेतु मांगें दुत्कार भले देना।
जनहित हम याचक हैं सुविचार हमें देना।।
अभिमान न हो उसका जो कुछ कर पाते हैं।
श्रद्धा पूरित होकर दो अश्रु चढ़ाते हैं।।
माँ तेरे चरणों ... ...

3. वो प्यार हमें दो माँ सारा जग मुस्काए।
जीवन भर ज्योति जगे तेरा स्नेह न चुक पाए।।
सब राह चलें तेरी तेरे जो कहाते हैं।
श्रद्धा पूरित होकर दो अश्रु चढ़ाते हैं।।
माँ तेरे चरणों ... ...

4. स्वीकार करो माता हम पुत्र तुम्हारे हैं।
अर्पित हैं सब तुमको जो कर्म हमारे हैं।।
कुछ पास नहीं अपने बस कर्ज़ चुकाते हैं।
श्रद्धा पूरित होकर दो अश्रु चढ़ाते हैं।।

माँ तेरे चरणों में हम शीश झुकाते हैं।
श्रद्धा पूरित होकर दो अश्रु चढ़ाते हैं।।

❖ ❖ ❖

मुझ पे इतनी कृपा बस विधाता रहे

मुझ पे इतनी कृपा बस विधाता रहे।
राम का नाम होठों पे आता रहे।।

भोर से साँझ तक नाम का ध्यान हो।
हर तरफ राम है बस यही ज्ञान हो।।
राम को ही हृदय ये बुलाता रहे।
राम का नाम होठों पे आता रहे।।

राम में ही सदा मैं लगाऊँ लगन।
राम की ही कथा में रहूँ मैं मगन।।
राम चरणों से ही मेरा नाता रहे।
राम का नाम होठों पे आता रहे।।

राम को ही ये रसना पुकारा करे।
राम को ही ये नैना निहारा करें।।
राम के गीत ही कण्ठ गाता रहे।
राम का नाम होठों पे आता रहे।।

मुझ पे इतनी कृपा बस विधाता रहे।
राम का नाम होठों पे आता रहे।।

❖ ❖ ❖

मुझे अपनी शरण में ले लो राम

मुझे अपनी शरण में ले लो राम,
ले लो राम मुझे अपनी शरण में ले लो राम।
लोचन मन में जगह न हो तो
जुगल चरण में ले लो राम, ले लो राम।

जीवन दे के जाल बिछाया
रच के माया नाच नचाया।
चिंता मेरी तभी मिटेगी
जब चिन्तन में ले लो राम।।
ले लो राम मुझे अपनी शरण में ले लो राम।

तुमने लाखों पापी तारे,
मेरी बारी बाज़ी हारे।
मेरे पास ना पुण्य की पूँजी
पद पूजन में ले लो राम।।
ले लो राम मुझे अपनी शरण में ले लो राम।

हर घर अटकूँ दर दर भटकूँ,
कहाँ कहाँ अपना सिर पटकूँ।
इस जीवन में मिलो ना तुम तो
मुझे मरण में ले लो राम।
ले लो राम मुझे अपनी शरण में ले लो राम।

❖ ❖ ❖

मुझे भगवान् वह दिल दे

मुझे भगवान् वह दिल दे कि जिस में प्यार तेरा हो।
जुबां वह दे जो करती हर समय गुणगान तेरा हो।

मुझे वो बक्श दे आँखें जिन्हें हो जुस्तजू तेरी।
कि हर इक ज़र्रे ज़र्रे में फ़कत दीदार तेरा हो।

मुझे देना अगर संगत तो देना अपने प्यारों की।
भरोसा छोड़ दुनिया का जिन्हें एतबार तेरा हो।

मेरा साथी ज़माने में बनाना उसको हे भगवन्।
दया हो जिसके सीने में ओ सेवादार तेरा हो।

ये प्रेमी काट ही लेगा खुशी से ज़िन्दगी के दिन।
मेरे सिर पर कृपा का हाथ गर करतार तेरा हो।

मुझे भगवान् वह दिल दे कि जिस में प्यार तेरा हो।
जुबां वह दे जो करती हर समय गुणगान तेरा हो।

❖ ❖ ❖

मेरा आपकी कृपा से सब काम हो रहा है

मेरा आपकी कृपा से सब काम हो रहा है।
करते हो तुम कन्हैया मेरा नाम हो रहा है।

पतवार के बिना ही मेरी नाव चल रही है।
हैरान है ज़माना मंजिल भी मिल रही है।
मैं जानता नहीं हूँ क्योंकर ये हो रहा है।
करते हो तुम कन्हैया मेरा नाम हो रहा है।

तुम साथ हो जो मेरे, किस चीज़ की कमी है।
किसी और चीज़ की अब दरकार भी नहीं है।
तेरे साथ से गुलाम अब गुलफ़ाम हो रहा है।
करते हो तुम कन्हैया मेरा नाम हो रहा है।

मैं तो नहीं हूँ काबिल, तेरा प्यार कैसे पाऊँ।
टूटी हुई वाणी से, गुणगान कैसे गाऊँ।।
तेरी प्रेरणा से फिर भी सम्मान हो रहा है।
करते हो तुम कन्हैया मेरा नाम हो रहा है।

तूफ़ान आँधियों में, तूने ही मुझको थामा।
तुम कृष्ण बन के आए, जब मैं बना सुदामा।
तेरा करम ही तो मुझ पर सरे आम हो रहा है।
करते हो तुम कन्हैया मेरा नाम हो रहा है।

❖ ❖ ❖

मेरा कोई ना सहारा बिन तेरे

मेरा कोई ना सहारा बिन तेरे,
घनश्याम सांवरिया मेरे ...

तेरे बिना है मेरा कौन यहाँ,
प्रभु तुम्हें छोड़ मैं जाऊँ कहाँ,
मैं तो आन पड़ा हूँ दर तेरे,
घनश्याम सांवरिया मेरे ...

मैंने जन्म लिया जग में आया,
तेरी कृपा से यह नर तन पाया,
तूने किये उपकार घनेरे,
घनश्याम सांवरिया मेरे ...

मेरे नैना कब से तरस रहे,
सावन भादों हैं बरस रहे,
अब छाये घनघोर अँधेरे,
घनश्याम सांवरिया मेरे ...

जिस दिन से दुनिया में आया,
मैंने पल भर चैन नहीं पाया,
सहे कष्ट पे कष्ट घनेरे,
घनश्याम सांवरिया मेरे ...

प्रभु आ जाओ प्रभु आ जाओ,
अब और ना मुझ को तरसाओ,
काटो जन्म मरण के फेरे,
घनश्याम सांवरिया मेरे ...

❖ ❖ ❖

मेरा गोपाल गिरधारी ज़माने से निराला है

मेरा गोपाल गिरधारी ज़माने से निराला है।
रंगीला है रसीला है ना गोरा है ना काला है।।

1. कभी सपनों में आ जाना, कभी रूपोश हो जाना।
ये तरसाने का मोहन ने निराला ढंग निकाला है।।
मेरा गोपाल गिरधारी .....

2. कभी वो रूठ जाता है, कभी वो मुस्कराता है।
इसी दर्शन की खातिर तो बड़े नाज़ों से पाला है।।
मेरा गोपाल गिरधारी .....

3. मज़े से दिल में आ बैठो, मेरे नैनों में बस जाओ।
अरे गोपाल मंदिर ये तुम्हारा देखा भाला है।।
मेरा गोपाल गिरधारी .....

4. कहीं ऊखल से बंध जाना, कहीं ग्वालों के संग आना।
तुम्हारी बाल लीला ने अज़ब धोखे में डाला है।।
मेरा गोपाल गिरधारी .....

❖ ❖ ❖

मेरे एक तुम्हीं आधार

मेरे एक तुम्हीं आधार, हरि आ जाओ इक बार।
मेरे एक तुम्हीं आधार, हरि आ जाओ इक बार।।

हरि आ जाओ हरि आ जाओ।
मेरे एक तुम्हीं आधार, हरि आ जाओ इक बार।।

जब याद तुम्हारी आती है, दिन रात मुझे तड़पाती है।
मेरे नैनों से बहे जलधार, हरि आ जाओ इक बार।
मेरे एक तुम्हीं आधार, हरि आ जाओ इक बार।।

तेरे द्वार खड़े युग बीत गए, मैं हार गया तुम जीत गए।
अब दर्शन दो साकार, हरि आ जाओ इक बार।
मेरे एक तुम्हीं आधार, हरि आ जाओ इक बार।।

कहाँ जाऊँ प्रभुजी ठोर नहीं, मेरा तेरे सिवा कोई और नहीं।
मेरी सुन लो करुण पुकार, हरि आ जाओ इक बार।
मेरे एक तुम्हीं आधार, हरि आ जाओ इक बार।।

मैं ज़ोर लगा कर हार गया, फिर भी न किनारा सूझ रहा।
मेरी नैया पड़ी मझधार, हरि आ जाओ इक बार।
मेरे एक तुम्हीं आधार, हरि आ जाओ इक बार।।

हरि आ जाओ हरि आ जाओ, हरि आ जाओ, हरि आ जाओ।

❖ ❖ ❖

मेरे गुरुदेव आशिष दो

मेरे गुरुदेव आशिष दो मेरा संकल्प पूरा हो।
वही संकल्प हो मेरा कि जो आदेश तेरा हो।।

परे लोकान्तरों से भी गति तेरी निराली है।
मुझे भी भावना वह दो जो भावादेश तेरा हो।।

कहा करते हैं तेरा स्रोत ही मुझ में प्रवाहित है।
उठा दो ज्वार अंतर में दिखे जो तत्त्व तेरा हो।।

नहीं कुछ साधना भक्ति चरण आश्रित मैं तेरा हूँ।
चक्षु सीपी की कनिका में छलकता प्यार तेरा हो।।

भले हैं हम तुम्हारे हैं बुरे हैं हम तुम्हारे हैं।
गोद में शीश हो मेरा पीठ पर हाथ तेरा हो।।

तुम्हारी याद छाई है सभी कर्मों विचारों में।
तेरे वात्सल्य से पालित मुझे आधार तेरा हो।।

❖ ❖ ❖

मेरे देवता मुझ को देना सहारा

मेरे देवता मुझ को देना सहारा।
कहीं छूट जाए ना दामन तुम्हारा।।

तेरे रास्ते से हटाती है दुनिया।
इशारों से मुझ को बुलाती है दुनिया।।
ना देखूँ मैं जग का ये झूठा इशारा।
कहीं छूट जाए ना दामन तुम्हारा।।

सिवा तेरे मन में समाए ना कोई।
लगन का ये दीपक बुझाए न कोई।।
तुम्हीं मेरी नैया तुम्हीं हो किनारा।
कहीं छूट जाए ना दामन तुम्हारा।।

सुबह शाम तुझ को ध्याता रहूँ मैं।
तेरे प्रेम के गीत गाता रहूँ मैं।।
तेरा नाम हो मुझ को प्राणों से प्यारा।
कहीं छूट जाए ना दामन तुम्हारा।।

मेरे देवता मुझ को देना सहारा।
कहीं छूट जाए ना दामन तुम्हारा।।

❖ ❖ ❖

मेरे मन प्रीत लगा

मेरे मन प्रीत लगा श्री रामजी के चरणों में।
होगा उद्धार तेरा श्री रामजी के चरणों में।।

सुबह हुई शाम हुई उम्र तमाम हुई।
आ अब बैठ भी जा श्री रामजी के चरणों में।।
मेरे मन प्रीत लगा .....

ज़िन्दगी की घड़ियों को व्यर्थ में तू मत खो।
कर ले सफल इनको बैठ श्री रामजी के चरणों में।।
मेरे मन प्रीत लगा .....

यह जग सपना है, कोई नहीं अपना है।
रामजी को अपना बना, बैठ श्री रामजी के चरणों में।।
मेरे मन प्रीत लगा .....

काम और क्रोध तेरा कुछ न बिगाड़ेंगे।
शान्ति की कुटिया बना श्री रामजी के चरणों में।।
मेरे मन प्रीत लगा .....

पाप और पुण्य सभी कर दे तू उसके अर्पण।
मन का फूल चढ़ा श्री रामजी के चरणों में।।
मेरे मन प्रीत लगा .....

दया की एक नज़र, पड़ गई तुझ पे अगर।
होगा कल्याण तेरा श्री रामजी के चरणों में।।
मेरे मन प्रीत लगा .....

❖ ❖ ❖

मेहराँ वालिया

मेहराँ वालिया साईयाँ रखीं चरणां दे कोल।
रखीं चरणां दे कोल, रखीं चरणां दे कोल।
मेहराँ वालिया साईयाँ रखीं चरणां दे कोल।।

मेरी फरियाद तेरे दर अग्गे होर सुणावां केनूं।
खोल ना दफ्तर ऐबां वाले दर तों धक्क ना मैनूं।।
दर तों धक्क ना मैनूं रक्खीं चरणां दे कोल।
मेहराँ वालिया साईयाँ रखीं चरणां दे कोल।।

औगुणहारे दी वेनती तुम सुणो गरीब नेवाज़।
जे मैं पूत कपूत हाँ तउ पिता कूँ लाज।।
तउ पिता कूँ लाज रक्खीं चरणां दे कोल।
मेहराँ वालिया साईयाँ रखीं चरणां दे कोल।।

तेरे जेहा मैनूं होर ना कोई मेरे जेहे लख तैनूं।
जे मेरे विच ऐब ना हुन्दे तूं बक्शेंदा कैनूं।।
तूं बक्शेंदा कैनूं रक्खीं चरणां दे कोल।
मेहराँ वालिया साईयाँ रखीं चरणां दे कोल।।

ओखे वेले कोई नहीं, ना बाबुल वीर ना माँ।
सब्बे धक्के देणदे कोउ ना पकड़े बाँह।।
कोउ ना पकड़े बाँह रक्खीं चरणां दे कोल।
मेहराँ वालिया साईयाँ रखीं चरणां दे कोल।।

❖ ❖ ❖

मैया बरस बरस रस वारी

मैया बरस बरस रस वारी।
बूँद बूँद पर तेरे जल की जाऊँ मैं बलिहारी।।
नदी, सरोवर, सागर बरसे, लागीं झड़ियाँ भारी।
मेरे अंगना भी तू बरसे, अतुल कृपा उर धारी।।
तू बरसे मैं जी भर न्हाँऊ, रोम रोम तव वारी।
सौम्य रूप में लय हो जाऊँ, अपना आप बिसारी।।

❖ ❖ ❖

मैली चादर ओढ़ के कैसे

मैली चादर ओढ़ के कैसे द्वार तिहारे आऊँ।
हे पावन परमेश्वर मेरे मन ही मन शरमाऊँ।।
तुम ने मुझ को जग में भेजा देकर निर्मल काया।
आकर के संसार में मैंने इसको दाग़ लगाया।।
जन्म जन्म की मैली चादर कैसे दाग छुड़ाऊँ।
मैली चादर ....
निर्मल वाणी पाकर तुझसे नाम न तेरा गाया।
नयन मूँद कर हे परमेश्वर कभी न तुझ को ध्याया।।
मन वीणा की तारें टूटी अब क्या गीत सुनाऊँ।
मैली चादर ....
इन पैरों से चलकर तेरे मंदिर कभी न आया।
जहाँ जहाँ हो पूजा तेरी कभी न शीश झुकाया।।
हे हरिहर मैं हार के आया, अब क्या हार चढ़ाऊँ।
मैली चादर .....

❖ ❖ ❖

मोहन प्रेम बिना नहिं मिलते

मोहन प्रेम बिना नहिं मिलते चाहे कर लो कोटि उपाय। (2)
कर लो कोटि उपाय चाहे कर लो कोटि उपाय।।
मोहन प्रेम बिना ....

मिले न यमुना सरस्वती में मिले न गंगा न्हाय। (2)
प्रेम सरोवर में जब डूबे प्रभु की झलक लखाय।।
मोहन प्रेम बिना ...

मिले न वह पर्वत निर्जन में, मिले न मन भटकाय। (2)
प्रेम बाग़ घूमे तो प्रभु को, घट में ले उतराय।।
मोहन प्रेम बिना ....

मिले न वह पंडित ज्ञानी में, मिले न ध्यान लगाय। (2)
ढाई अक्षर प्रेम पढ़ो तो, नटवर नयन समाय।।
मोहन प्रेम बिना ....

मिले न वह मंदिर मूरत में, मिले न अलख जगाय। (2)
प्रेम बिंदु जब दृग से टपके तुरत प्रकट हो जाए।।
मोहन प्रेम बिना .....

❖ ❖ ❖

यदि नाथ का नाम दया निधि है

यदि नाथ का नाम दया निधि है तो दया भी करेंगे कभी न कभी।
हम हैं अनाथ और नाथ हैं वो तो सनाथ करेंगे कभी कभी।।

सारे जग को हरि प्यारे हैं, वो सब के पालनहारे हैं।
जग तारणहार कहावत हैं, भव पार करेंगे कभी न कभी।।
यदि नाथ का नाम दया निधि है.....

जो ईश भक्ति गुण गाते हैं, मन वांछित फल वो पाते हैं।
श्री राम कृपालु दयानिधि हैं, तो कृपा भी करेंगे कभी न कभी।।
यदि नाथ का नाम दया निधि है.....

हम पाप के करने वाले हैं, प्रभु पाप के हरने वाले हैं।
जब पाप अधिक बढ़ जायेंगे तो विनाश करेंगे कभी न कभी।।
यदि नाथ का नाम दया निधि है.....

था विषय वासना में अटका, सत्कर्म मार्ग से मैं भटका।
अंधकार भरा ये जीवन है, वो प्रकाश करेंगे कभी न कभी।।
यदि नाथ का नाम दया निधि है.....

अभिमान में हरि को भूल गया, अज्ञान में उनसे दूर गया।
जब द्वार पे उनके आन पड़ा, दर्शन भी मिलेंगे कभी न कभी।।
यदि नाथ का नाम दया निधि है.....

❖ ❖ ❖

यहि विनती है पल पल छिन छिन

यहि विनती है पल पल छिन छिन, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान् तुम्हारे चरणों में।।

चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अँधेरा हो।
पर मन नहीं डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान् तुम्हारे चरणों में।।

चाहे बैरी सब संसार बने, मेरा जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान् तुम्हारे चरणों में।।

चाहे आग में मुझ को जलना हो, चाहे काँटों पर भी चलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान् तुम्हारे चरणों में।।

जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे।
मेरा काम ये आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान् तुम्हारे चरणों में।।

❖ ❖ ❖

ये गर्व भरा मस्तक मेरा

ये गर्व भरा मस्तक मेरा, प्रभु चरण धूल तक झुकने दे।
अहंकार विकार भरे मन को, निज नाम की माला जपने दे।।
ये गर्व भरा ....

मैं मन के मैल को धो न सका, ये जीवन तेरा हो न सका।
मैं प्रेमी हूँ इतना न झुका, गिर भी जो पड़ूँ तो उठने दे।।
ये गर्व भरा ....

मैं ज्ञान की बातों में खोया, और कर्महीन पड़ कर सोया।
जब आँख खुली तो मन रोया, जग सोये मुझ को जगने दे।।
ये गर्व भरा ....

जैसा हूँ मैं खोटा या खरा, निर्दोष शरण में आ तो गया।
इक बार ये कह दे खाली जा या प्रीत की रीत छलकने दे।।
ये गर्व भरा ....

ये तो प्रेम की बात है ऊधो

ये तो प्रेम की बात है ऊधो
बंदगी तेरे बस की नहीं है।
यहाँ सिर दे के होते हैं सौदे
आशिकी इतनी सस्ती नहीं है।
ये तो प्रेम की बात है ऊधो ... ...

प्रेम वालों ने कब वक्त पूछा
उनकी पूजा में सुन ले ऐ ऊधो।
यहाँ दम दम में होती है पूजा
सिर झुकाने की फुर्सत नहीं है।
ये तो प्रेम की बात है ऊधो ... ...

जो असल में हैं मस्ती में डूबे
उन्हें क्या परवाह है ज़िन्दगी की।
जो उतरती है चढ़ती है मस्ती
वो हकीकत में मस्ती नहीं है।
ये तो प्रेम की बात है ऊधो ... ...

जिसकी नज़रों में हैं श्याम प्यारे
वो तो रहते हैं जग से नियारे।
जिसकी नज़रों में मोहन समाये
वो नज़र फिर तरसती नहीं है।
ये तो प्रेम की बात है ऊधो ... ...

❖ ❖ ❖

रचा है सृष्टि को जिस प्रभु ने

रचा है सृष्टि को जिस प्रभु ने वही ये सृष्टि चला रहे हैं।
जो पेड़ हमने लगाया पहले उसी का फल हम अब पा रहे हैं।।

इसी धरा से शरीर पाए,
इसी धरा में फिर सब समाए।
है सत्य नियम यही धरा का,
इक आ रहे हैं इक जा रहे हैं।।
रचा है .....

जिन्होंने भेजा जगत में जाना,
तय कर दिया लौट के फिर से आना।
जो भेजने वाले हैं यहाँ पे,
वही फिर वापस बुला रहे हैं।।
रचा है .....

बैठे हैं जो धान की बालियों में,
समाए मेहंदी की लालियों में।
हर डाल हर पत्ते में समा के,
गुल रंग बिरंगे खिला रहे हैं।।
रचा है .....

❖ ❖ ❖

राम किरपा जो तेरी बरसती रहे

राम किरपा जो तेरी बरसती रहे
तेरी भक्ति के मैं गीत गाता रहूँ।
याद दिल में जो तेरी बसी ही रहे
तेरी राहों में पग मैं बढ़ाता रहूँ।।

बोझ पापों का सिर पर उठाया मग़र
याद हिरदय में तेरी बसाई नहीं।
रिश्ते दुनिया के सारे निभाए मग़र
प्रीत मालिक से अपनी निभाई नहीं।।
मेरी नैया को जो तू सँभाले नहीं
यूँ भँवर में ही गोते लगाता रहूँ।। राम किरपा .....

सुख के पीछे जो भागा तो सुख ना मिला
ना मिला चैन दुनिया के आगोश में।
मैंने सोचा बहुत कि मैं जाऊँ कहाँ
होश खोया बहुत जोश ही जोश में।।
अब शरण में तेरी मैं आया प्रभु
बैठ कदमों में सिर को झुकाता रहूँ।। राम किरपा .....

❖ ❖ ❖

राम है जीवन हमारा राम प्राणाधार है

राम है जीवन हमारा राम प्राणाधार है।
राम है कर्ता विधाता राम पालनहार है।।

राम है दु:ख का विनाशक राम सर्वानन्द है।
राम है बल तेज़धारी राम करुणाकन्द है।।

राम सब का पूज्य है हम राम का पूजन करें।
राम ही के ध्यान से हम शुद्ध अपना मन करें।।

राम है जीवन हमारा राम प्राणाधार है।
राम है कर्ता विधाता राम पालनहार है।।

राम का गुरुमंत्र जपने से रहेगा शुद्ध मन।
बुद्धि दिन प्रतिदिन बढ़ेगी धर्म में होगी लगन।।

राम के जप से हमारा ज्ञान बढ़ता जाएगा।
अंत में प्रिय राम हम को मोक्ष पद पहुँचाएगा।।

राम है जीवन हमारा राम प्राणाधार है।
राम है कर्ता विधाता राम पालनहार है।।

❖ ❖ ❖

रामा रामा रटते रटते

रामा रामा रटते रटते, बीती रे उमरिया।
रघुकुल नन्दन कब आओगे, भिलनी की डगरिया।।

मैं शबरी भिलनी की जाई, भजन भाव ना जानूँ रे।
राम तेरे दर्शन के हित, वन में जीवन पालूँ रे।।
चरणकमल से निर्मल कर दो, दासी की झोंपड़िया।
रामा रामा रटते रटते, बीती रे उमरिया।।

रोज सवेरे वन में जाकर, फल चुन चुन कर लाऊँगी।
अपने प्रभु के सन्मुख रख के, प्रेम से भोग लगाऊँगी।।
मीठे मीठे बेरों की मैं, भर लाई छबरिया।
रामा रामा रटते रटते, बीती रे उमरिया।।

श्याम सलोनी मोहिनी मूरत, नैनन बीच बसाऊँगी।
सुबह शाम नित उठकर मैं तो, तेरा ध्यान लगाऊँगी।।
अब क्या प्रभु जी भूल गए हो, दासी की डगरिया।
रामा रामा रटते रटते, बीती रे उमरिया।।

नाथ तेरे दर्शन की प्यासी, मैं अबला इक नारी हूँ।
दर्शन बिन दोऊ नैना तरसें, सुन लो बहुत दुखारी हूँ।।
हरी रूप में दर्शन दे दो, डालो एक नजरिया।
रामा रामा रटते रटते, बीती रे उमरिया।।

रघुकुल नन्दन कब आओगे, भिलनी की डगरिया।
रामा रामा रटते रटते, बीती रे उमरिया।।

❖ ❖ ❖

राम से बड़ा राम का नाम

राम से बड़ा राम का नाम।
जैसा चाहो वैसा जप लो, भली करेंगे राम।।

दो अक्षर में शक्ति भरी है, देखो तो आज़माकर।
चाहे लिखकर पढ़कर देखो, चाहे देखो गाकर।।

मन बन जाएगा पल भर में उनका पावन धाम।
राम से बड़ा राम का नाम।।

❖ ❖ ❖

रे मन प्रति-श्वास पुकार यही

रे मन प्रति-श्वास पुकार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे।
तन-नौका की पतवार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे।

जग में व्यापक आधार यही, जग में लेता अवतार यही।
है निराकार साकार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे।

ध्रुव को ध्रुव-पद दातार यही, प्रह्लाद गले का हार यही।
नारद-वीणा का तार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे।

सब सुकृतों का आगार यही, गंगा-यमुना की धार यही।
श्री रामेश्वर हरिद्वार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे।

सज्जन का साहूकार यही, प्रेमी-जन का व्यापार यही।
सुख 'बिन्दु' सुधा का सार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे।

❖ ❖ ❖

वह शक्ति हमें दो दयानिधे

वह शक्ति हमें दो दयानिधे कर्तव्य मार्ग पर डट जावें।
पर सेवा पर उपकार में हम जग जीवन सफ़ल बना जावें।।

हम दीन हीन निबलों विकलों के सेवक बन संताप हरें।
जो हैं अटके भूले-भटके, उनको तारें हम तर जावें।।

छल द्वेष दम्भ पाखण्ड झूठ, अन्याय से निशदिन दूर रहें।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना, शुचि प्रेम सुधा रस बरसाएँ।।

निज आन बान मर्यादा का हमें ध्यान रहे अभिमान रहे।
जिस देश जाति में जन्म लिया बलिदान उसी पर हो जाएँ।।

वह शक्ति हमें दो दयानिधे ....

❖ ❖ ❖

विश्वपते जगदीश तू

विश्वपते जगदीश तू तेरा ही नाम राम है।
मस्तक झुका के प्रेम से ईश्वर तुझे प्रणाम है।।

1. सृष्टि बना के पालना दाता तेरे है हाथ में।
करना प्रलय भी अंत में तेरा ही नाथ काम है।।
विश्वपते जगदीश तू तेरा ही नाम राम है।।

2. ऋतुएँ बदल के आ रहीं, नदियाँ सिंधु में जा रहीं।
शाम के बाद है सुबह, सुबह के बाद शाम है।।
विश्वपते जगदीश तू तेरा ही नाम राम है।।

3. सूरज समय पे ढल रहा, वायु नियम से चल रहा।
झुकता है सिर ये देखकर तेरा जो इंतज़ाम है।।
विश्वपते जगदीश तू तेरा ही नाम राम है।।

4. आता नज़र नहीं मगर कण कण में तू समा रहा।
जग में जहाँ पे तू न हो ऐसा न कोई स्थान है।।
विश्वपते जगदीश तू तेरा ही नाम राम है।।

5. होता है न्याय ही सदा ईश्वर तेरे दरबार में।
चलती नहीं सिफारिशें, चढ़ता न कोई दाम है।।
विश्वपते जगदीश तू तेरा ही नाम राम है।।

6. तेरे पदार्थ हैं प्रभु, जग में सभी के वास्ते।
सब के लिये हैं वेद भी जिनमें तेरा पैग़ाम है।।
विश्वपते जगदीश तू तेरा ही नाम राम है।।

❖ ❖ ❖

शरण में आए हैं हम तुम्हारी

शरण में आए हैं हम तुम्हारी, दया करो हे दयालु भगवन्।
सम्भालो बिगड़ी दशा हमारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।

1. ना हम में बल है ना हम में शक्ति
ना हम में साधन ना हम में भक्ति।
तुम्हारे दर के हैं हम भिखारी
दया करो हे दयालु भगवन्।।

2. जो तुम हो स्वामी तो हम हैं सेवक
जो तुम पिता हो तो हम हैं बालक।
जो तुम हो ठाकुर तो हम पुजारी
दया करो हे दयालु भगवन्।।

3. जो हम भले हैं तो हैं तुम्हारे
जो हम बुरे हैं तो हैं तुम्हारे।
तुम्हारे होकर भी हम दुखी हैं
दया करो हे दयालु भगवन्।।

4. प्रदान कर दो महान शक्ति
भरो हमारे में ज्ञान भक्ति।
तभी कहाओगे तापहारी
दया करो हे दयालु भगवन्।।

शरण में आए हैं हम तुम्हारी, दया करो हे दयालु भगवन्।

❖ ❖ ❖

श्री वृन्दाबन धाम अपार

श्री वृन्दाबन धाम अपार, रटे जा राधे राधे।
राधे अलबेली सरकार रटे जा राधे राधे।।

1. वृन्दाबन गलियाँ डोलो, श्री राधे राधे बोलो।
तेरो जनम सफल हो जाय रटे जा राधे राधे।
राधे अलबेली सरकार रटे जा राधे राधे।।

2. या वृन्दाबन की लीला, नहिं जाने गुरु और चेला।
या में ऋषि मुनि गए हार रटे जा राधे राधे।
राधे अलबेली सरकार रटे जा राधे राधे।।

3. श्री वृन्दाबन रास रचायो, शिव गोपी रूप बनायो।
सब देवन करें विचार रटे जा राधे राधे।
राधे अलबेली सरकार रटे जा राधे राधे।।

4. जो राधे राधे रटता, दुःख जनम जनम का कटता।
वा को हो जाय बेड़ा पार रटे जा राधे राधे।
राधे अलबेली सरकार रटे जा राधे राधे।।

5. जो राधा जन्म न होतो, रसराज बिचारो रोतो।
होतो न कृष्ण-अवतार रटे जा राधे राधे।
राधे अलबेली सरकार रटे जा राधे राधे।।

6. या ब्रज की रज सुन्दर है, देवन को भी दुर्लभ है।
मुक्ता रज शीश चढ़ाय रटे जा राधे राधे।
राधे अलबेली सरकार रटे जा राधे राधे।।

7. जो राधे राधे गावे, सो प्रेम पदारथ पावे।
भवसागर हो जाय पार रटे जा राधे राधे।
राधे अलबेली सरकार रटे जा राधे राधे।।

8. जो राधा नाम न गायो, सो बिरथा जनम गँवायो।
वा को जीवन है धिक्कार रटे जा राधे राधे।
राधे अलबेली सरकार रटे जा राधे राधे।।

❖ ❖ ❖

कर ले नारायण से प्यार

कर ले नारायण से प्यार, ये है दुनिया में सार,
ऐसी काया तुझे न मिलेगी बार बार।
कर ले नारायण से प्यार ...
क्या तू जहाँ में लाया, क्या लेके जायेगा।
सब कुछ बन्दे तेरा, यहीं रह जायेगा।।
ये है झूठा सब संसार, इसमें फंसना है बेकार।
ऐसी काया तुझे न मिलेगी बार बार।।
कर ले नारायण से प्यार ...
नाम प्रभु का भूला, विषयों में झूले झूला।
भटक रहा है काहे, मद में तू फूला फूला।।
तेरी काया होगी छार, ना तू नाम प्रभु का बिसार।
ऐसी काया तुझे न मिलेगी बार बार।।
कर ले नारायण से प्यार ...
जाना होगा इक दिन याम की नगरिया।
राह कठिन है सँकरी हैं गलियाँ।।
बैठे चारों नम्बरदार, मुश्किल होगा करना पार।
ऐसी काया तुझे न मिलेगी बार बार।।
कर ले नारायण से प्यार ...

❖ ❖ ❖

सदा अपनी रसना को रसमय बनाकर

सदा अपनी रसना को रसमय बनाकर।
श्री राम रामा जपाकर जपाकर।

1. इसी जप से कष्टों का कम भार होगा।
इसी जप से पापों का प्रतिकार होगा।
इसी जप से नर तन का शृंगार होगा।
इसी जप से तू प्रभु को स्वीकार होगा।
ये सांसों की दिन रात माला बनाकर।
श्री राम रामा जपाकर जपाकर।

2. इसी जप से आत्मा ये बलवान होगा।
इसी जप से कर्त्तव्य का ध्यान होगा।
इसी जप से संतों का सम्मान होगा।
इसी जप से संतुष्ट भगवान् होगा।
अकेला हो या साथ सबको मिलाकर।
श्री राम रामा जपाकर जपाकर।

3. जो श्रद्धा से इस जप को है नित्य गाता।
तो उसका यही जप है जीवन विधाता।
यही जप पिता है यही जप है माता।
यही जप है इस जग में कल्याण दाता।
इसी का कोई रूप मन में बिठाकर।
श्री राम रामा जपाकर जपाकर।

4. ये जप जब तेरे मन को ललचा रहा हो।
वो रसिकों को इस पंथ पर ला रहा हो।
मज़ा राम के नाम का आ रहा हो।
बस नाम ही हर तरफ छा रहा हो।

तो कुछ प्रेम के बिंदु दृग से गिराकर।
श्री राम रामा जपाकर जपाकर।

सदा अपनी रसना को रसमय बनाकर।
श्री राम रामा जपाकर जपाकर।

❖ ❖ ❖

साधो सहज समाधि भली

साधो सहज समाधि भली।
गुरु प्रताप जा दिन ते जागी दिन दिन अधिक चली।
साधो सहज समाधि भली।।

1. जहँ जहँ डोलौं सो परिकरमा, जो कुछ करौं सो सेवा।
जब सोवौं तब करौं दण्डवत, पूजौं और ना देवा।।
साधो सहज समाधि भली।।

2. कहौं सो नाम सुनौं सो सिमरन, खाँव पिवौं सो पूजा।
गिरह उजाड़ एक सम लेखों, भाव मिटावौं दूजा।।
साधो सहज समाधि भली।।

3. आँख न मूंदौं कान न रूंधौं, तनिक कष्ट नहिं धारौं।
खुले नैन पहिचानौं हँसि हँसि, सुंदर रूप निहारौं।।
साधो सहज समाधि भली।।

4. सबद निरंतर सों मन लागा, मलिन वासना त्यागी।
ऊठत बैठत कबहुँ न छूटै, ऐसी तारी लागी।।
साधो सहज समाधि भली।।

5. कह कबीर यह उनमनि रहनी, सो परगट कर गाई।
दु:ख सुख ते जेहि परे परमपद, तेहि पद रहा समाई।।
साधो सहज समाधि भली।।

❖ ❖ ❖

सारे जहां के मालिक

सारे जहां के मालिक तेरा ही आसरा है।
राज़ी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा है।।

1. हम क्या बताएँ तुझ को सब कुछ तुझे ख़बर है।
हर हाल में हमारी तेरी तरफ़ नज़र है।।
किस्मत है वो हमारी जो तेरा फैसला है।
राज़ी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा है।।

2. हाथों को हम दुआ की ख़ातिर उठाएँ कैसे।
सज़दे में तेरे आकर सिर को झुकाएँ कैसे।।
मज़बूरियाँ हमारी सब ही तू जानता है।
राज़ी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा है।।

3. रोकर कटे या हँसकर कटती है ज़िन्दगानी।
तू ग़म दे या खुशी दे सब तेरी मेहरबानी।।
तेरी खुशी समझकर सब ग़म भुला दिया है।
राज़ी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा है।।

4. दुनिया बना के मालिक जाने कहाँ छिपा है।
आता नहीं नज़र तू बस इक यही गिला है।।
दिल में जो तू बसा है फिर क्यूँ ये फासला है।
राज़ी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा है।।

सारे जहां के मालिक तेरा ही आसरा है।
राज़ी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा है।।

❖ ❖ ❖

साँसों का क्या भरोसा

साँसों का क्या भरोसा रुक जाएँ कब कहाँ पर।
इक नाम तेरा भगवन् आ जाए बस ज़ुबां पर।

मत हँस कभी किसी पर, न सता कभी किसी को।
ना जाने कल को तेरा क्या हाल हो यहाँ पर।
साँसों का क्या भरोसा रुक जाएँ कब कहाँ पर।

गर हंस जैसा जीवन चाहता है ऐ बशर तू।
चुन ले गुणों के मोती बिखरे जहाँ जहाँ पर।
साँसों का क्या भरोसा रुक जाएँ कब कहाँ पर।

कर कर्म इतना ऊँचा कि बुलन्दियों को छू ले।
इज़्ज़त से नाम तेरा आ जाए हर ज़ुबां पर।
साँसों का क्या भरोसा रुक जाएँ कब कहाँ पर।

❖ ❖ ❖

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये।
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये।।

मुख में हो राम नाम राम सेवा हाथ में।
तू अकेला नहीं प्यारे राम तेरे साथ में।।
विधि का विधान जान हानि लाभ सहिये।
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये।।

सीताराम सीताराम .....

किया अभिमान तो फिर मान नहीं पाएगा।
होगा प्यारे वही जो श्री राम जी को भाएगा।।
फल आशा त्याग शुभ काम करते रहिये।
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये।।

सीताराम सीताराम .....

जिंदगी की डोर सौंप हाथ दीनानाथ के।
महलों में राखे चाहे झोंपड़ी में वास दे।।
धन्यवाद निर्विवाद राम राम कहिये।
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये।।

सीताराम सीताराम .....

आशा एक रामजी से दूजी आशा छोड़ दे।
नाता एक रामजी से दूजा नाता तोड़ दे।।
साधुसंग रामरंग अंग अंग रंगिये।
काम रस त्याग प्यारे राम रस पगिये।।

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये।
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये।।

❖ ❖ ❖

सुख के सब साथी

सुख के सब साथी दु:ख में ना कोई।
मेरे राम .... मेरे राम
तेरा नाम एक साँचा दूजा न कोई।।

जीवन आनी जानी छाया। झूठी माया झूठी काया।
फिर काहे को सारी उमरिया पाप की गठरी ढोई।।
सुख के सब साथी दु:ख में ना कोई।

ना कुछ तेरा ना कुछ मेरा। ये जग जोगी वाला फेरा।
राजा हो या रंक सभी का, अंत एक सा होई।।
सुख के सब साथी दु:ख में ना कोई।

बाहर की तू माटी फाँके। मन के भीतर क्यों ना झाँके।
उजले तन पर मान किया, और मन की मैल ना धोई।।
सुख के सब साथी दु:ख में ना कोई।

मेरे राम ... मेरे राम
तेरा नाम एक साँचा दूजा ना कोई।।

❖ ❖ ❖

सुख दुःख दोनों रहते

सुख दुःख दोनों रहते जिसमें जीवन है वो गाँव।
कभी धूप कभी छाँव।।
ऊपर वाला पासा फैंके नीचे चलते दाँव।
कभी धूप कभी छाँव। कभी धूप तो कभी छाँव।।

1. भले भी दिन आते जगत में बुरे भी दिन आते।
कड़वे मीठे फल करम के यहाँ सभी पाते।।
कभी सीधे कभी उलटे पड़ते अजब समय के पाँव।
कभी धूप कभी छाँव। कभी धूप तो कभी छाँव।।

2. क्या खुशियाँ क्या ग़म ये सब मिलते बारी बारी।
मालिक की मर्ज़ी पे चलती ये दुनिया सारी।।
ध्यान से खेना जग नदिया में बन्दे अपनी नाव।
कभी धूप कभी छाँव। कभी धूप तो कभी छाँव।।

❖ ❖ ❖

सुरत ध्यान प्रभु नाम से जोड़ो

सुरत ध्यान प्रभु नाम से जोड़ो, राम नाम सुखकारी है।
नाम ही केवल सार जगत में, नाम की महिमा भारी है।।

1. राज सिंहासन सब शाहों ने नाम की खातिर छोड़ दिए।
मीरा ने भी सारे रिश्ते नाम की खातिर तोड़ दिए।।
शाहों से भी ऊँचा है जो नाम का बना भिखारी है।
नाम ही केवल सार जगत में, नाम की महिमा भारी है।।

2. ऋषि मुनियों ने नाम के बल पर भवसागर को पार किया।
नाम के सुख पर दुनिया के सारे सुखों को वार दिया।।
जन्म जन्म के पाप जलाती यह अद्‌भुत चिंगारी है।
नाम ही केवल सार जगत में, नाम की महिमा भारी है।।

3. नाम की महिमा जान पवनसुत रामभक्त कहलाए थे।
नाम की मुदरी मुख में रखकर सीता की सुधि लाए थे।।
नाम का झरना मीठा है भवसागर का जल खारी है।
नाम ही केवल सार जगत में, नाम की महिमा भारी है।।

4. नाम कृपा से भक्त विभीषण लंकराज कहलाए थे।
नाम कृपा से भारी पत्थर सागर में तर पाए थे।।
नाम कृपा से चरण परस कर तर गई गौतम नारी है।
नाम ही केवल सार जगत में, नाम की महिमा भारी है।।

5. नाम ही परम पुरुष की ज्योति नाम बिना सब माया है।
खुश किस्मत जिसने सद्‌गुरु से नाम पदारथ पाया है।।
नाम बिना सब कारज मिथ्या धोखे में संसारी है।
नाम ही केवल सार जगत में, नाम की महिमा भारी है।।

6. करुणा सागर हिरदय में जब नाम की ज्योति जगाते हैं।
अन्तर्मन में खुशियों के तब मेघ हिलोरे खाते हैं।।
अंग अंग में भर जाती फिर राम की नाम खुमारी है।
नाम ही केवल सार जगत में, नाम की महिमा भारी है।।

❖ ❖ ❖

हे राम जग में साँचो तेरा नाम

हे राम हे राम
जग में साँचो तेरा नाम।
हे राम हे राम।

1. तू ही माता तू ही पिता है।
तू ही तो है राधा का श्याम।
हे राम हे राम।
2. तू अन्तर्यामी सब का स्वामी।
तेरे चरणों में चारों धाम।
हे राम हे राम।
3. तू ही बिगाड़े तू ही सँवारे।
इस जग के सारे काम।
हे राम हे राम।
4. तू ही जग दाता विश्व विधाता।
तू ही सुबह तू ही शाम।
हे राम हे राम।।

❖ ❖ ❖

हर श्वास में हो सुमिरन तेरा

हर श्वास में हो सुमिरन तेरा, ऐसा बना दो प्रभु जीवन मेरा।
तेरी सेवा में ही बीते हर क्षण मेरा, ऐसा बना दो प्रभु जीवन मेरा।।

तेरी मूरत को अपने मन में बसाऊँ।
आठों पहर मैं तेरे गीत गाऊँ।।
तेरे चरणों में रहे यह मन मेरा।
ऐसा बना दो प्रभु जीवन मेरा।।

जग में रहूँ पर जग से आज़ाद रहूँ।
तेरे सिवा और ना किसी का मोहताज़ रहूँ।।
नाम तेरा हो सच्चा धन मेरा।
ऐसा बना दो प्रभु जीवन मेरा।।

ख्वाहिशें ना जग की मुझ को सताएँ।
चिंताएँ ना हरगिज़ नज़दीक आएँ।।
करता रहूँ मैं चिंतन तेरा।
ऐसा बना दो प्रभु जीवन मेरा।।

तेरी पूजा में मन ऐसा खो जाए।
मैं ना रहूँ तू ही तू रह जाए।।
सफल हो जाए ये नर तन मेरा।
ऐसा बना दो प्रभु जीवन मेरा।।

हर श्वास में हो सुमिरन तेरा।
ऐसा बना दो प्रभु जीवन मेरा।।

❖ ❖ ❖

हरि नाम न हिरदय से भूलो

हरि नाम न हिरदय से भूलो, ये भुलाने के काबिल नहीं है।
बड़ी मुश्किल से नर तन मिला है, ये गँवाने के काबिल नहीं हैं।।

1. चोला अनमोल तुझको मिला है,
इसमें जीवन का फूल खिला है।
साँसें गिन गिन के तुझ मिली हैं,
ये लुटाने के काबिल नहीं हैं।।
हरि नाम ...

2. ऐसे अनमोल जीवन को पाकर,
खोज ना की कभी मन लगाकर।
कैसे भगवान् के पास जाना,
मुँह दिखाने के काबिल नहीं है।।
हरि नाम ...

3. बात मानो तो बिलकुल सही है,
जो गुरुजी ने तुम से कही है।
तेरे कर्मों की लिखी बही है,
वो सुनाने के काबिल नहीं है।।
हरि नाम ...

4. ले ले सद्गुरु का तू भी सहारा,
मन तू मान ले कहना हमारा।
चोला फिर न मिलेगा दुबारा,
क्योंकि तू इसके काबिल नहीं है।।
हरि नाम ...

❖ ❖ ❖

संसार में जीवों पर

संसार में जीवों पर, आशा न रखा करना।
जब कोई न हो अपना, श्री राम कहा करना।।
जीवन के समुन्दर में, तूफ़ान भी आते हैं।
जो उनके सहारे हैं, खुद आ के बचाते हैं।।
वो आप ही आवेंगे, तुम याद किया करना।
जब कोई न हो अपना, श्री राम कहा करना।।
दावा न जमा लेना, यह देश बेगाना है।
इस घर में तुझे प्राणी, वापिस नहीं आना है।।
भगवान भी कहता है, जीवों पे दया करना।
जब कोई न हो अपना, श्री राम कहा करना।।
ऐ भक्त! न दुःख से रो, तुझ से प्रभु दूर नहीं।
भक्तों का दुखी होना, उसको मंजूर नहीं।।
वो आप ही आवेंगे, तुम याद किया करना।
जब कोई न हो अपना, श्री राम कहा करना।।

❖ ❖ ❖

हे जग त्राता विश्व विधाता

हे जग त्राता विश्व विधाता, हे सुख शांति निकेतन हे।
प्रेम के सिंधु दीन के बंधु, दुःख दारिद्र्य विनाशन हे।
नित्य अखण्ड अनन्त अनादि, पूरण ब्रह्म सनातन हे।
जग आश्रय जगपति जगवंदन, अनुपम अलख निरंजन हे।
प्राण सखा त्रिभुवन प्रतिपालक, जीवन के अवलम्बन हे।

❖ ❖ ❖

हे नाथ अब तो ऐसी दया हो

हे नाथ अब तो ऐसी दया हो जीवन निरर्थक जाने न पाए।
यह मन न जाने क्या क्या कराए कुछ बन न पाया अपने बनाए।।

1. संसार में ही आसक्त रहकर,
   दिन रात अपने मतलब की कहकर।
   सुख के लिये लाखों दु:ख सहकर,
   ये दिन अभी तक यूँ ही बिताए।।
   हे नाथ अब तो .....
2. ऐसा जगा दो फिर सो न पाऊँ,
   अपने को निष्काम प्रेमी बनाऊँ।
   मैं आपको चाहूँ और पाऊँ,
   संसार का भय कुछ रह न पाए।।
   हे नाथ अब तो .....
3. वह योग्यता दो सत्कर्म कर लूँ,
   अपने हृदय में सद्भाव भर लूँ।
   नर तन है साधन भव सिंधु तर लूँ,
   ऐसा समय फिर आये न आये।।
   हे नाथ अब तो .....
4. हे नाथ मुझे निरभिमानी बना दो,
   दारिद्रय हर लो दानी बना दो।
   आनन्दमय विज्ञानी बना दो,
   मैं हूँ पथिक एक आशा लगाए।।
   हे नाथ अब तो ऐसी दया हो
   जीवन निरर्थक जाने न पाए।

❖ ❖ ❖

हे मेरे गुरुदेव

हे मेरे गुरुदेव करुणा सिंधु करुणा कीजिए।
हूँ अधम आधीन अशरण अब शरण में लीजिये।।

1. खा रहा गोते हूँ मैं भवसिंधु के मझधार में।
आसरा है दूसरा कोई न इस संसार में।।
हे मेरे गुरुदेव ....

2. मुझ में है जप तप न साधन और नहीं कुछ ज्ञान है।
निर्लज्जता है एक बाकी और बस अज्ञान है।।
हे मेरे गुरुदेव ....

3. पाप बोझे से लदी नैया भँवर में जा रही।
नाथ दौड़ो और बचा लो जल्द डूबी जा रही।।
हे मेरे गुरुदेव ....

4. आप भी यदि छोड़ देंगे फिर कहाँ जाऊँगा मैं।
जन्म दुःख से नाव कैसे पार कर पाऊँगा मैं।।
हे मेरे गुरुदेव ....

5. सब जगह मंज़िल भटक कर ली शरण अब आपकी।
पार करना या न करना दोनों मरज़ी आपकी।।
हे मेरे गुरुदेव ....

हूँ अधम आधीन अशरण अब शरण में लीजिये।
हे मेरे गुरुदेव करुणा सिंधु करुणा कीजिए।।

❖ ❖ ❖

हे राम मैं तुझ में रम जाऊँ

हे राम मैं तुझ में रम जाऊँ ऐसी निर्मल बुद्धि कर दो।
मैं झोली पसारे आन खड़ा भिक्षा से यह झोली भर दो।

1. यह चंचल मन संकल्पों का नित जाल बिछाया करता है।
इक झाँकी दिखाकर अपनी प्रभु मनमोहन रूप इसे कर दो।
2. चित चिन्ता करता रात दिवस विषयों के आनन्द पाने को।
हे सत चित आनन्द रूप प्रभो मेरे चित्त को तुम चेतन कर दो।
3. परदोष न देखूं नयनों से ना सुनूं बुराई कानों से।
सारा जग राम का रूप दिखे ऐसी मेरी दृष्टि कर दो।
4. दिल से गुणगान करूं तेरा जिह्वा से नाम उचारा करूं।
ऐसी किरपा कर दो हे हरि मेरी वाणी में अमृत भर दो।
मैं झोली पसारे आन खड़ा भिक्षा से यह झोली भर दो।

❖ ❖ ❖

कट जायेंगे बंधन

कट जायेंगे बंधन तेरे सभी, तू राम नाम गुण गाये जा।
अन्दर बैठे हैं राम तेरे, गा गा के उन्हें रिझाये जा।।

परवाह न कर दुःख द्वन्द्वों की, ये आयेंगे और जायेंगे।
तन, मन, बुद्धि, दिल से उठकर, तू आगे कदम बढ़ाये जा।।

कंधा देगी शक्ति मैय्या, श्रद्धा विश्वास भी संग होंगे।
इन तीनों का तू संग किये, श्री दिव्य धाम को धाये जा।।

थककर कदम गिरेगा जब, मैय्या आँचल फैला देगी।
तू बिना झिझक माँ प्यारी के, आँचल में निज को लिटाये जा।।

❖ ❖ ❖

हो जायें बन्द आँखें

हो जायें बन्द आँखें तेरा ध्यान करते करते।
इक साथ ये ही होगा तेरा नाम चलते चलते।।

1. यश आप का मैं गाऊँ दुनिया से चला जाऊँ।
हो जाए बंद वाणी गुणगान करते करते।।
हो जायें बन्द आँखें ....

2. सुध तन की भूल जाऊँ कभी होश में न आऊँ।
प्रभु प्रेम वाले अमृत का पान करते करते।।
हो जायें बन्द आँखें ....

3. तेरे ध्यान में रहूँ मैं हर श्वास में जपूँ मैं।
यश प्रेम सद्गुरु का बस गान करते करते।।
हो जायें बन्द आँखें ....

4. देखा करूँ मैं राहें जब तक न आप आयें।
तब तक न तन से निकलें ये प्राण चलते चलते।।
हो जायें बन्द आँखें ....

5. तेरे धाम पहुँच जाऊँ या किसी के काम आऊँ।
शुभ कर्म पाठ पूजा तेरा जाप करते करते।।
हो जायें बन्द आँखें ....

❖ ❖ ❖

आरति श्री रामायण जी की

आरति श्री रामायन जी की।
कीरति कलित ललित सिय पी की॥
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद।
बालमीक बिग्यान बिसारद॥
सुक सनकादि सेष अरु सारद।
बरनि पवनसुत कीरति नीकी॥ आरति ....
गावत बेद पुरान अष्टदस।
छओ सास्त्र सब ग्रंथन को रस॥
मुनि जन धन संतन को सरबस।
सार अंस संमत सब ही की॥ आरति .....
गावत संतत संभु भवानी।
अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी॥
ब्यास आदि कबिबर्ज बखानी।
कागभुसुंडि गरुड़ के ही की॥ आरति .....
कलिमल हरनि बिषय रस फीकी।
सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की॥
दलन रोग भव मूरि अमी की।
तात मात सब बिधि तुलसी की॥ आरति .....

❖ ❖ ❖

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्।
– शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

❖ ❖ ❖

लेखक का संक्षिप्त परिचय

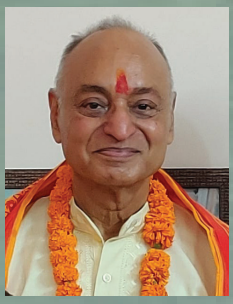

नाम:	रमेश चन्द्र गुप्त 'विनीत'
जन्म तिथि:	31 जुलाई 1946
जन्म स्थान:	ग्राम दुल्हेड़ा, जिला झज्जर (हरियाणा)
शिक्षा:	1. वाणिज्य स्नातक श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय - 1966 2. विधि स्नातक, विधि संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय - 1971
व्यवसाय:	नौकरी - पंजाब नेशनल बैंक - 1966-2000 वरिष्ठ प्रबंधक पद से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति
सदस्य:	स्वामी रामानन्द साधना परिवार - 2005 से अद्यतन
अन्य प्रकाशन:	1. गीता प्रवेशिका (Geeta for the Beginners) 2. अध्यात्म विषयक लेख 3. वन्दना, स्तुति, प्रार्थना तथा वैदिक सामान्य ज्ञान 4. रामचरितमानस के लोकप्रिय अंश
प्राप्ति स्थान:	1018, महागुन मैंशन-1, इन्दिरापुरम्, गाज़ियाबाद-201014
सम्पर्क सूत्र:	9818385001